# अथ विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः॥

श्री भगवान् उवाच।

भूयः एव महाबाहो शृणु मे परमम् वचः ।

यत् ते अहम् प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥ १० - १ ॥

| शब्द | शब्दाचा - उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| भूयः | BhuyaH | again | फिर | पुन्हा |
| एव | Eva | verily | भी | एकदा |
| महाबाहो | Mahabaho | O mighty armed! | हे महाबाहो ! | हे पराक्रमी अर्जुना ! |
| शृणु | ShruNu | Listen to | सुनो | ते तू ऐक |
| मे | Me | My | मेरे | माझे |
| परमम् | Paramam | supreme | परम | श्रेष्ठ |
| वचः | VachaH | word | वचन को | ( रहस्य व प्रभावयुक्त ) वचन |
| यत् | Yat | which | जिसे | जे |
| ते | Te | to you | तुम जैसे | तुझ्यासाठी |
| अहम् | Aham | I | मैं | मी |
| प्रीयमाणाय | Preeya-maaNaaya | one who is beloved and absorbed in my speech with delight | अतिशय प्रेम रखनेवाले के लिये | माझ्याबद्दल अत्याधिक प्रेम बाळगणाऱ्या |
| वक्ष्यामि (वच्-स्यामि) | Vakshyaamee | I will declare | कहूँगा | सांगेन |
| हितकाम्यया | Hita-kaamyayaa | wishing your welfare | हित की इच्छा से | तुझ्या हितासाठी |

अन्वय :-

श्री भगवान् उवाच - हे महाबाहो ! भूयः एव मे परमम् वचः शृणु। प्रीयमाणाय ते यत् अहम् हित-काम्यया वक्ष्यामि ॥ १० - १ ॥

English translation:-

The Blessed Lord said, "O mighty armed Arjuna, again listen to My supreme word which I will speak to you, who is beloved and absorbed in my speech with delight, for your welfare".

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान् बोले, " हे महाबाहो , फिर भी मेरे परम रहस्य और प्रभावयुक्त वचन को सुनो, जिसे मैं तुम जैसे अतिशय प्रेम रखनेवाले के लिये, हित की इच्छा से कहूँगा।

मराठी भाषान्तर :-

श्रीभगवान म्हणाले , " हे पराक्रमी अर्जुना , पुनः माझे श्रेष्ठ वचन ऐक . माझ्या भाषणाने संतुष्ट होणाऱ्या तुला मी तुझ्या हितासाठी सांगत आहे ."

विनोबांची गीताई :-

फिरुनि सांगतों ऐक वाक्य उत्तम मी तुज
राखसी श्रवणीं गोडी तुझें मी हित इच्छितों ॥ १० - १ ॥

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवम् न महर्षयः ।

अहम् आदिः हि देवानाम् महर्षीणाम् च सर्वशः ॥ १० - २ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| न | Na | not | न | नाही |
| मे | Me | My | मेरी | माझी |
| विदुः | ViduH | know | जानते हैं | जाणतात |
| सुरगणाः | SuragaNaaH | Hosts of Gods | देवतालोग | हे देवतालोक |
| प्रभवम् | Prabhavam | origin | उत्पत्ति को | उत्पत्ती (आत्मलीलेने प्रगट होणे) |
| न | Na | not | न | नाही |
| महर्षयः | Mahar - shayaH | great sages | महर्षिजन | महर्षिजन (सुद्धा जाणत नाही) |
| अहम् | Aham | I | मैं | मी |
| आदिः | AadiH | the source | आदिकरण हूँ | आदिकारण (आहे) |
| हि | Hi | for | क्योंकि | कारण |
| देवानाम् | Devaanaam | of Gods | देवताओं का | देवतांचा ( आणि ) |
| महर्षीणाम् | Mahatr-ShiNaam | of great sages | महर्षियों का भी | महर्षींचा |
| च | Cha | and | और | सुद्धा |
| सर्वशः | SarvashaH | in all respects | सब प्रकार से | सर्व प्रकारांनी |

अन्वय :- सुरगणाः , महर्षयः ( च ) मे प्रभवम् न विदुः । अहम् हि देवानाम् महर्षीणाम् च सर्वशः आदिः ( अस्मि ) ॥ १० - २ ॥

English translation:-

Neither the gods nor the great sages know My origin, for in all respects, I am the source of all the gods and the great sages.

हिन्दी अनुवाद :-

मेरी उत्पत्ति को अर्थात् लीला से प्रकट होने को न देवतालोग जानते हैं और न महर्षिजन ही जानते हैं, क्योंकि मैं सब प्रकार से देवताओं का और महर्षियों का भी आदिकरण हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

देवगणांना आणि महर्षींना माझ्या उत्पत्तीचे ज्ञान नाही, कारण देवांचे व महर्षींचे सर्वप्रकारे मीच आदिकारण आहे .

विनोबांची गीताई :-

न देव ज़ाणती माझा प्रभाव न महर्षि हि
सर्वथा मी चि देवांचें महर्षींचें हि मूळ कीं ॥ १० - २ ॥

यः माम् अजम् अन् - आदिम् च वेत्ति लोक महेश्वरम् ।

असंमूढः सः मर्त्येषु सर्व - पापैः प्रमुच्यते ॥ १० - ३ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| यः | YaH | who | जो | जो |
| माम् | Maam | Me | मुझ को | मला |
| अजम् | Ajam | unborn | अजन्मा अर्थात् वास्तव में जन्मरहित | अजन्मा (जन्मरहित) |
| अन् - आदिम् | Anaadim | beginning-less | अनादि | अनादी |
| च | Cha | and | और | आणि |
| वेद् - ति | Vetti | knows | तत्व से जानता है | तत्त्वतः जाणतो |
| लोक | Loka | of the world | लोकों का | लोकांचा |
| महा - ईश्वरम् | Maheshwaram | great God | महान् ईश्वर | महान ईश्वर |
| असंमूढः | AsammudhaH | undeluded | ज्ञानवान् पुरुष | ज्ञानवान पुरुष |
| सः | SaH | he | वह | तो |
| मर्त्येषु | Marteshu | among mortals | मनुष्यों में | मनुष्यांमधील |
| सर्व | Sarva | all | सम्पूर्ण | संपूर्ण |
| पापैः | PaapaiH | from all sins | पापोंसे | पापांतून |
| प्रमुच्यते | Pramuchyate | liberated | मुक्त हो जाता है | मुक्त होऊन जातो |

अन्वय :-

यः माम् अजम् , अन् - आदिम् , लोकमहेश्वरम् च वेत्ति , सः मर्त्येषु असंमूढः ( भूत्वा ) सर्व - पापैः प्रमुच्यते ॥ १० - ३ ॥

English translation:-

He who knows Me as unborn, beginning-less and the Supreme Lord of the world, he the undeluded among mortals is freed from all sins.

हिन्दी अनुवाद :-

जो मुझ को अजन्मा अर्थात् वास्तव में जन्मरहित, अनादि और लोकों का महान् ईश्वर तत्व से जानता है; वह मनुष्यों में ज्ञानवान् पुरुष सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

जो मला जन्मरहित , अनादी आणि लोकांचा महान ईश्वर असे तत्त्वतः जाणतो , तो मनुष्यांमध्ये मोहरहित असणारा पुरुष , सर्व पापांपासून मुक्त होतो .

विनोबांची गीताई :-

ओळखे ज़ो अजन्मा मी स्वयं भू विश्व चालक
निर्मोह तो मनुष्यांत सुटला पातकांतुनी ॥ १० - ३ ॥

बुद्धिः ज्ञानम् असंमोहः क्षमा सत्यम् दमः शमः ।

सुखम् दुःखम् भवः अभावः भयम् च अभयम् एव च ॥ १० - ४ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| बुद्धिः | BuddhiH | intellect | निश्चय करने की शक्ति | (निश्चयात्मक) बुद्धी |
| ज्ञानम् | Dnyaanam | knowledge | यथार्थ ज्ञान | यथार्थ ज्ञान |
| असंमोहः | AsammohaH | non-illusion | असम्मूढता | असंमूढता |
| क्षमा | Kshamaa | forgiveness | क्षमा | क्षमा |
| सत्यम् | Satyam | truth | सत्य | सत्य |
| दमः | DamaH | control over senses | इन्द्रियों का वश में करना | इंद्रियांना वश करून घेणे |
| शमः | ShamaH | control over mind | मनका निग्रह | मनाचा निग्रह |
| सुखम् | Sukham | joy | सुख | सुख |
| दुःखम् | DuHkham | sorrow | दुःख | दुःख |
| भवः | BhavaH | existence | उत्पत्ति | उत्पत्ती |
| अभावः | AbhaavaH | non-existence | प्रलय | व प्रलय |
| भयम् | Bhayam | fear | भय | भय |
| च | Cha | and | और | आणि |
| अभयम् | Abhayam | fearlessness | अभय | अभय |
| एव | Eva | also | तथा | तसेच |
| च | Cha | and | और | व |

अन्वय :-

बुद्धिः , ज्ञानम् , असंमोहः , क्षमा , सत्यम् , दमः , शमः , सुखम् , दुःखम् , भवः , अभावः , भयम् च अभयम् एव च ॥ १० - ४ ॥

English translation:-

Intellect, knowledge, non-illusion, forgiveness, truth, control over senses and mind, joy and sorrow, existence and non-existence, fear and fearlessness also...

हिन्दी अनुवाद :-

निश्चय करने की शक्ति, यथार्थ ज्ञान, असम्मूढता, क्षमा, सत्य, इन्द्रियों का वश में करना, मन का निग्रह तथा सुख - दुःख, उत्पत्ति - प्रलय और भय - अभय ।

मराठी भाषान्तर :-

बुद्धी , यथार्थ ज्ञान , भ्रमरहित स्थिती , क्षमा , सत्य , इंद्रियनिग्रह , मनाचा निग्रह , सुख - दुःख, उत्पती आणि प्रलय , भय आणि अभय ... ( हे सर्व भाव माझ्यापासून निर्माण झालेले आहेत ) .

विनोबांची गीताई :-

बुद्धिः निर्मोहता ज्ञान सत्यता शम निग्रह

जन्म नाश सुखें दुःखें लाभालाभ भयाभय ॥ १० - ४ ॥

अहिंसा समता तुष्टिः तपः दानम् यशः अयशः ।

भवन्ति भावाः भूतानाम् मद्-तः एव पृथक् - विधाः ॥ १० - ५ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| अहिंसा | Ahimsaa | non-injury | अहिंसा | अहिंसा |
| समता | Samataa | equanimity | समता | समता |
| तुष्टिः | TushtiH | contentment | सन्तोष | संतोष |
| तपः | TapaH | austerity | तप | तप |
| दानम् | Daanam | charity | दान | दान |
| यशः | YashaH | fame | कीर्ति | यश |
| अयशः | AyashaH | infamy | अपकीर्ति | अपयश |
| भवन्ति | Bhavanti | arise | होते हैं | निर्माण होतात |
| भावाः | BhaavaaH | characteristics | भाव | भाव |
| भूतानाम् | Butaanaam | of beings | प्राणियों के | प्राणिमात्रांचे |
| मद्-तः | MattaH | From Me | मुझ से | माझ्यापासून |
| एव | Eva | alone | ही | केवळ |
| पृथक् - विधाः | Prithak-VidhaaH | of different kinds | नाना प्रकार के | नाना प्रकारचे |

अन्वय :-

अहिंसा , समता , तुष्टिः , तपः , ज्ञानम् , यशः , अयशः ( इमे ) पृथक् - विधाः भूतानाम् भावाः मद्-तः एव भवन्ति ॥ १० - ५ ॥

English translation:-

Non-injury, equanimity, contentment, austerity, charity, fame and infamy – different kinds of characteristics of beings arise from Me alone.

हिन्दी अनुवाद :-

तथा अहिंसा, समता, सन्तोष, तप, दान, कीर्ति और अपकीर्ति ऐसे ये प्राणियोंके नाना प्रकारके भाव मुझसे ही उत्पन्न होते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

अहिंसा , समता , संतोष , तप , दान , यश आणि अपयश इत्यादि प्राणिमात्रांचे निरनिराळे भाव माझ्यापासूनच निर्माण झालेले आहेत .

विनोबांची गीताई :-

तप दातृत्व संतोष अहिंसा समता क्षमा
माझ्या चि पासुनी भूतीं भाव हे वेगवेगळे ॥ १० - ५ ॥

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारः मनवः तथा ।

मद् - भावाः मानसाः जाताः येषाम् लोके इमाः प्रजाः ॥ १० - ६ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| महर्षयः | Mahar - ShayaH | Great sages | महर्षिजन | महर्षी जन |
| सप्त | Sapta | seven | सात | सात |
| पूर्वे | Purve | the ancients | पूर्वमें होनेवाले सनकादि | पूर्वकाळचे |
| चत्वारः | ChatvaaraH | the four | चार (उनसे भी) | चार |
| मनवः | ManavaH | Manus | स्वायम्भुव आदि चौदह मनु ये | मनू |
| तथा | Tathaa | and also | तथा | तसेच |
| मद् - भावाः | Mad-BhaavaaH | endowed with My Power | मुझ में भाववाले सब - के - सब | माझ्या ठिकाणी असलेले भाव |
| मानसाः | MaanasaaH | From My Mind | मेरे संकल्प से | माझ्या मनाने |
| जाताः | JaataaH | born | उत्पन्न हुए हैं | उत्पन्न झालेले |
| येषाम् | Yeshaam | of whom | जिनकी | ज्यांची |
| लोके | Loke | in the world | संसार में है | संसारात |
| इमाः | ImaaH | these | यह | ही |
| प्रजाः | PrajaaH | creatures | सम्पूर्ण प्रजा | प्रजा |

अन्वय :-

पूर्वे सप्त महर्षयः तथा चत्वारः मनवः मद् - भावाः , मानसाः जाताः येषाम् लोके इमाः प्रजाः ॥ १० - ६ ॥

English translation:-

The seven great sages and the four Manus, endowed with My power, were born of My mind; and from them have come forth all these creatures in the world.

हिन्दी अनुवाद :-

सात महर्षिजन, चार उनसे भी पूर्व में होनेवाले सनकादि तथा स्वायम्भुव आदि चौदह मनु ये मुझ में भाववाले सब - के - सब मेरे संकल्पसे उत्पन्न हुए हैं, जिन की संसार में यह सम्पूर्ण प्रजा है ।

मराठी भाषान्तर :-

पूर्वीचे सात महर्षी तसेच ( एकूण चौदापैकी ) चार मनू माझ्यावर भाव ठेवणारे होते . ते माझ्या मनापासून निर्माण झालेले आहेत . जगातील ही प्रजा त्यांच्याचपासून निर्माण झालेली आहे .

विनोबांची गीताई :-

महर्षि सात पूर्वींचे चौघे मनु तसे चि ते
माझे संकल्पिले भाव ज्यांची लोकांत ही प्रजा ॥ १० - ६ ॥

एताम् विभूतिम् योगम् च मम यः वेत्ति तत्त्वतः ।

सः अविकम्पेन योगेन युज्यते न अत्र संशयः ॥ १० - ७ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| एताम् | Etaam | these | इस | या |
| विभूतिम् | Vibhutim | Supreme manifestations | परम ऐश्वर्यरूप विभूतिको | विभूतीला |
| योगम् | Yogam | Yoga power (union with the Self) | योगशक्तिको | योगशक्तीला |
| च | Cha | and | और | आणि |
| मम | Mama | Mine | मेरी | माझ्या |
| यः | YaH | whoever | जो पुरुष | जो (पुरुष) |
| वेत्ति | Vetti | knows | जानता है | जाणतो |
| तत्त्वतः | TattvataH | in reality | तत्वसे | तत्त्वतः |
| सः | SaH | he | वह | तो |
| अविकम्पेन | Avikampena | unshakable | निश्चल | निश्चल |
| योगेन | Yogena | by union with the Self | भक्तियोगसे | योगाने |
| युज्यते | Yujyate | becomes united | युक्त हो जाता है | युक्त होऊन जातो |
| न | Na | not | नहीं है | नाही |
| अत्र | Atra | here | इसमें कुछ भी | याबाबतीत |
| संशयः | SamshayaH | doubt | संशय | संशय |

अन्वय :-

यः मम एताम् विभूतिम् योगम् च तत्त्वतः वेत्ति , सः अविकम्पेन योगेन युज्यते अत्र संशयः न ॥ १० - ७ ॥

English translation:-

He who knows in reality these Supreme manifestations and My Yoga (union with the Aatman and ultimately with the Brahman) ; he becomes established in the unshakable union, there is no doubt about it.

हिन्दी अनुवाद :-

जो पुरुष मेरी इस परम ऐश्वर्यरूप विभूति को और योगशक्ति को तत्त्व से जानता है, वह निश्चल भक्तियोग से युक्त हो जाता है, इस में कुछ भी संशय नहीं है।

मराठी भाषान्तर :-

जो पुरुष , माझ्या या परमेश्वररूप विभूतीला आणि योगशक्तीला तत्त्वतः जाणतो त्याला योग प्राप्त होतो , यात मुळीच शंका नाही .

विनोबांची गीताई :-

हा योग - युक्त विस्तार माझा ज़ो नीट ओळखे

त्यास निष्कंप तो योग लाभे ह्यांत न संशय ॥ १० - ७ ॥

अहम् सर्वस्य प्रभवः मत्तः सर्वम् प्रवर्तते ।

इति मत्त्वा भजन्ते माम् बुधाः भावसमन्विताः ॥ १० - ८ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| अहम् | Aham | I | मैं वासुदेव ही | मी (वासुदेव) |
| सर्वस्य | Sarvasya | of all | सम्पूर्ण जगत् की | संपूर्ण जगताच्या |
| प्रभवः | PrabhavaH | origin / the source | उत्पत्ति का कारण हूँ | उत्पत्तीचे कारण (आहे) |
| मत्तः | MattaH | from Me | मुझ से ही | माझ्यामुळेच |
| सर्वम् | Sarvam | every thing | सब जगत् | सर्व (जग) |
| प्रवर्तते | Pravartate | evolves | चेष्टा करता है | सक्रिय होते |
| इति | Iti | thus | इस प्रकार | अशाप्रकारे |
| मत्त्वा | Matvaa | having understood | समझकर | जाणून |
| भजन्ते | Bhajante | worship | भजते हैं | भजतात |
| माम् | Maam | Me | मुझ परमेश्वर को | मला (परमेश्वराला) |
| बुधाः | BudhaaH | wise | बुद्धिमान् भक्तजन | बुद्धिमान भक्तजन |
| भाव-सम्-अनु-इताः | Bhaava-SamanvitaaH | endowed with devotion | श्रद्धा और भक्ति से युक्त | श्रद्धा व भक्ती यांनी युक्त असणारे |

अन्वय :-

अहम् सर्वस्य प्रभवः ( अस्मि ) , मत्तः सर्वम् प्रवर्तते , इति मत्त्वा बुधाः भावसमन्विताः माम् भजन्ते ।

English translation:-

I am the origin of all, from Me everything evolves; understanding thus, the wise worship Me, endowed with devotion.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं वासुदेव ही सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति का कारण हूँ और मुझ से ही सब जगत् चेष्टा करता है, इस प्रकार समझकर श्रद्धा और भक्ति से युक्त बुद्धिमान् भक्तजन मुझ परमेश्वर को निरन्तर भजते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

मी सर्व जगाच्या उत्पत्तीचे कारण आहे . माझ्यामुळे सर्व जग क्रियाशील होते असे जाणून , श्रद्धा व भक्तीने युक्त असलेले , बुद्धिमान भक्त मला परमेश्वराला भजतात .

विनोबांची गीताई :-

सर्वांचें मूळ माझ्यांत प्रेरणा मज़पासुनी
हें ओळखूनि भक्तीनें ज़ाणते भज़ती मज़ ॥ १० - ८ ॥

मद् - चित्ताः मद् - गत् - प्राणाः बोधयन्तः परस्परम् ।

कथयन्तः च माम् नित्यम् तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥ १० - ९ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| मद् - चित्ताः | Mad - ChittaH | those with mind in Me | निरन्तर मुझ में मन लगानेवाले | माझ्याठिकाणी मन लावलेले |
| मद् - गत् - प्राणाः | Mad - Gat - PraaNaaH | those with life's activities absorbed in Me | मुझ में ही प्राणों को अर्पण करनेवाले भक्तजन | माझ्या ठायी प्राण अर्पण करणारे |
| बोधयन्तः | BodhayantaH | enlightening | जनाते हुए | बोध करीत |
| परस्परम् | Parasparam | one another | आपस में मेरे प्रभाव को | एकमेकांना |
| कथयन्तः | KathayantaH | speaking | कथन करते हुए | कथन करीत |
| च | Cha | and | तथा गुण और प्रभावसहित मेरा | आणि |
| माम् | Maam | Me | मुझ वासुदेव में ही | मज (वासुदेवामध्ये) |
| नित्यम् | Nityam | always | निरन्तर | नेहमी |
| तुष्यन्ति | Tushyanti | are contented | सन्तुष्ट होते हैं | संतुष्ट होतात |
| च | Cha | and | और | आणि |
| रमन्ति | Ramanti | are delighted | रमण करते हैं | रमतात |
| च | Cha | and | ही | केवळ |

अन्वय :-

मद् - चित्ताः , मद् - गत् - प्राणाः , परस्परम् बोधयन्तः , कथयन्तः च माम् नित्यम् तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥ १० - ९ ॥

English translation:-

Those with mind Me, with pranas (life's activities) absorbed in Me, enlightening one another and always speaking of Me, they are contented and delighted.

हिन्दी अनुवाद :-

निरन्तर मुझ में मन लगानेवाले और मुझ में ही प्राणों को अर्पण करनेवाले भक्तजन मेरी भक्ति की चर्चा के द्वारा आपस में मेरे प्रभाव को जनाते हुए तथा गुण और प्रभावसहित मेरा कथन करते हुए ही निरन्तर सन्तुष्ट होते हैं और मुझ वासुदेव में ही निरन्तर रमण करते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

ते भक्त माझ्या ठिकाणी मन लावतात. मला प्राण अर्पण करतात. माझ्या प्रभावाचा परस्परांना बोध करतात. माझे गुण आणि प्रभाव यांचे विषयी सांगत, नित्य तृप्त होतात आणि माझ्यात रममाण होतात.

विनोबांची गीताई :-

चित्तें प्राणें ज़से मी चि एकेमेकांस बोधिती

भरुनि कीर्तनें माझ्या ते आनंदांत खेळती ॥ १० - ९ ॥

तेषाम् सतत युक्-तानाम् भजताम् प्रीतिपूर्वकम् ।

ददामि बुद्धि - योगम् तम् येन माम् उपयान्ति ते ॥ १० - १० ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| तेषाम् | Teshaam | to them | उन | त्या |
| सतत<br>युक्-तानाम् | Satata-Yuktaanaam | ever steadfast | निरन्तर मेरे<br>ध्यान आदिमें<br>लगे हुए और | माझ्या ध्यानात<br>निरंतर गुंतलेल्या |
| भजताम् | Bhajataam | worshipping | भजनेवाले<br>भक्तोंको | भजणाऱ्या<br>(भक्तांना) |
| प्रीतिपूर्वकम् | Preeti-purva-Kam | with love | प्रेमपूर्वक | प्रेमपूर्वक |
| ददामि | Dadaami | I give | देता हूँ | मी देतो |
| बुद्धि - योगम् | Buddhi-Yogam | Buddhi – Yoga (union by intellect) | तत्वज्ञानरूप योग | (तत्त्वज्ञानरूपी)<br>बुद्धियोग |
| तम् | Tam | that | वह | तो |
| येन | Yena | by which | जिससे | ज्यामुळे |
| माम् | Maam | to Me | मुझको ही | मला |
| उपयान्ति | Upayaanti | come | प्राप्त होते हैं | जवळ येतात |
| ते | Te | they | वे | ते |

अन्वय :-

( एवम् ) सतत युक्त-तानाम् , प्रीतिपूर्वकम् भजताम् तेषाम् , तम् बुद्धि - योगम् ददामि , येन ते माम् उपयान्ति ॥ १० - १० ॥

English translation:-

To those, ever steadfast, worshipping Me with love, I give them the "Buddhi-Yoga" i.e. union by intellect, by virtue of which they come to Me.

हिन्दी अनुवाद :-

उन निरन्तर मेरे ध्यान आदि में लगे हुए और प्रेमपूर्वक भजनेवाले भक्तों को मैं वह तत्वज्ञानरूप योग देता हूँ, जिस से वे मुझ को ही प्राप्त होते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

अशा प्रकारे सतत हा योग करणाऱ्यांना आणि प्रेमाने माझे ( ईश्वराचे ) भजन करणाऱ्यांना मी बुद्धियोग देतो ; ज्यामुळे ते माझ्या ( ईश्वराच्या ) जवळ येतात .

विनोबांची गीताई :-

असे जे रंगले नित्य भजती प्रीति पूर्वक

त्यांस मी भेटवीं मातें देउनी बुद्धि योग तो ॥ १० - १० ॥

तेषाम् एव अनुकम्पा - अर्थम् अहम् अज्ञानजम् तमः ।

नाशयामि आत्मभावस्थः ज्ञानदीपेन भास्वता ॥ १० - ११ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| तेषाम् | Teshaam | for them | उन के ऊपर | त्यांच्या (वर) |
| एव | Eva | mere | ही | केवळ |
| अनुकम्पा - अर्थम् | Anukampaa - Artham | for compassion | अनुग्रह करने के लिये | अनुग्रह करण्यासाठी |
| अहम् | Aham | I | मैं स्वयं | मी |
| अज्ञानजम् | Adnyaan - Jam | born of ignorance | अज्ञानजनित | (त्यांचा) अज्ञानजनित |
| तमः | TamaH | darkness | अन्धकार को | अंधःकार |
| नाशयामि | Naashayaami | I destroy | नष्ट कर देता हूँ | नष्ट करून टाकतो |
| आत्मभावस्थः | Aatma-BhaavasthaH | dwelling within their Self | उन के अन्तःकरण में स्थित हुआ | त्यांच्या अंतःकरणात वसलेला |
| ज्ञानदीपेन | Dnyaana-Deepen | by the lamp of knowledge | तत्वज्ञानरुप दीपक के द्वारा | ज्ञानरूपी दीपज्योतीने |
| भास्वता | Bhaasvataa | luminous | प्रकाशमय | प्रकाशमय |

अन्वय :-

तेषाम् एव अनुकम्पा - अर्थम् अहम् आत्मभावस्थः ( सन् ) भास्वता ज्ञानदीपेन अज्ञानजम् तमः नाशयामि ॥ १० - ११ ॥

English translation:-

Out of mere compassion for them dwelling within their Self, I dispel the darkness born out of ignorance, by illuminating the lamp of knowledge.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन, उन के ऊपर अनुग्रह करने के लिये उन के अन्तःकरण में स्थित हुआ मैं स्वयं ही उन के अज्ञानजनित अन्धकार को प्रकाशमय तत्वज्ञानरुप दीपक के द्वारा नष्ट कर देता हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

त्यांच्यावर अनुग्रह करण्यासाठी , मी त्यांच्या अन्तःकरणात वास करून आणि प्रकाशमय ज्ञानदीपाने , त्यांचा अज्ञानामुळे निर्माण झालेला अंधकार नाहीसा करतो .

विनोबांची गीताई :-

करूनी करुणा त्यांची हृदयीं राहुनी स्वयें
तेजस्वी ज्ञान दीपानें अज्ञान तम घालवीं ॥ १० - ११ ॥

अर्जुन उवाच ।

परम् ब्रह्म परम् धाम पवित्रम् परमम् भवान् ।

पुरुषम् शाश्वतम् दिव्यम् आदिदेवम् अजम् विभूम् ॥ १० - १२ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| अर्जुन | Arjuna | Arjuna | अर्जुन ने | अर्जुन |
| उवाच | Uvaacha | said | कहा | म्हणाला |
| परम् | Param | supreme | परम | श्रेष्ठ |
| ब्रह्म | Brahma | Brahman | ब्रह्म | ब्रह्म |
| परम् | Param | supreme | परम | श्रेष्ठ |
| धाम | Dhaama | abode | धाम | स्थान |
| पवित्रम् | Pavitram | purifier | पवित्र हैं, क्योंकि | पवित्र |
| परमम् | Paramam | supreme | परम | श्रेष्ठ |
| भवान् | Bhavaan | You (Shree-Krishna) | आप | आपण |
| पुरुषम् | Purusham | human being | पुरुष एवं | पुरुष |
| शाश्वतम् | Shaashvatam | eternal | सनातन | सनातन |
| दिव्यम् | Divyam | divine | दिव्य | दिव्य |
| आदिदेवम् | Aadi-Devam | primeval | देवों का भी आदिदेव | देवांचाही आदिदेव |
| अजम् | Ajam | unborn | अजन्मा और | जन्मरहित |
| विभूम् | Vibhum | all pervading | सर्वव्यापी | सर्वव्यापी |

अन्वय :-

अर्जुन उवाच - भवान् परम् ब्रह्म , परम् धाम ( आसी ) , सर्वे त्वाम् परमम् पवित्रम् पुरुषम् , शाश्वतम् दिव्यम् , आदिदेवम् , अजम् विभूम् ( इति आहुः ) ॥ १० - १२ ॥

English translation:-

Arjuna said, "You are the Supreme Brahman, the Supreme Abode, the Supreme Purifier, the eternal, the divine human being, the unborn and the all pervading entity."

हिन्दी अनुवाद :-

अर्जुन ने कहा , " आप परम ब्रह्म, परम धाम और परम पवित्र हैं, क्योंकि आप को सब ऋषिगण सनातन दिव्य पुरुष एवं देवों का भी आदिदेव, अजन्मा और सर्वव्यापी कहते हैं । "

मराठी भाषान्तर :-

अर्जुन म्हणाला , " आपण परब्रह्म , परम तेज , परम पावन , दिव्य व शाश्वत पुरुष , आदिदेव , अजन्मा आणि सर्वव्यापी आहात ."

विनोबांची गीताई :-

पवित्र तूं पर - ब्रह्म थोर मोक्ष - धाम तूं
आत्मा नित्य अ - जन्मा तूं विभु देवादि दिव्य तूं ॥ १० - १२ ॥

आहुः त्वाम् ऋषयः सर्वे देव-ऋषिः नारदः तथा ।

असितः देवलः व्यासः स्वयम् च एव ब्रवीषि मे ॥ १० - १३ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| आहुः | AahuH | They acclaim | कहते हैं | म्हणतात |
| त्वाम् | Tvaam | You | आप को | आपल्याला |
| ऋषयः | RishayaH | sages | ऋषिगण | ऋषिगण |
| सर्वे | Sarve | all | सब | सर्व |
| देव-ऋषिः | Deva-Rishi | Divine sage | देवर्षि | देवर्षी |
| नारदः | NaaradaH | Naarada | नारद | नारद |
| तथा | Tathaa | and | वैसे ही | तसेच |
| असितः | AsitaH | Asita | असित ऋषि | असित ऋषी |
| देवलः | DevalaH | Devala | देवल ऋषि | देवल ऋषी |
| व्यासः | VyaasaH | Vyasa | महर्षि व्यास | महर्षी व्यास |
| स्वयम् | Svayam | Yourself | स्वयं आप | आपण स्वतः |
| च | Cha | and | और | आणि |
| एव | Eva | also | भी | सुद्धा |
| ब्रवीषि | BraveeShi | say | कहते हैं | सांगता आहात |
| मे | Me | to me (to Arjuna) | मेरे प्रति | मला |

अन्वय :-

त्वाम् सर्वे ऋषयः, देव-ऋषिः नारदः तथा असितः, देवलः, व्यासः (पुरुषम्, शाश्वतम् दिव्यम्, आदिदेवम् , अजम् विभूम् इति) आहुः। (त्वम्) च स्वयम् एव मे ब्रवीषि ॥ १० - १३ ॥

English translation:-

All these sages acclaim You (as described in the previous Shloka) and also the divine sage Naarada, Asita, Devala & Vyasa and (on top of that) You Yourself says so to me.

हिन्दी अनुवाद :-

वैसे ही देवर्षि नारद तथा असित और देवल ऋषि तथा महर्षि व्यास जैसे भी सब ऋषिगण आप को कहते हैं और स्वयं आप भी मेरे प्रति कहते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

सर्व ऋषी , देवर्षी - नारद , तसेच असित , देवल आणि व्यासही असेच म्हणतात . आपण स्वतःही मला असेच सांगता आहात .

विनोबांची गीताई :-

ऋषि एक मुखें गाती तसे असित देवल
व्यास नारद देवर्षि तूं हि आपण सांगसी ॥ १० - १३ ॥

सर्वम् एतत् ऋतम् मन्ये यत् माम् वदसि केशव ।

न हि ते भगवन् व्यक्तिम् विदुः देवाः न दानवाः ॥ १० - १४ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| सर्वम् | Sarvam | all | सबको | सर्व |
| एतत् | Etat | This | इस | हे |
| ऋतम् | Ritam | true | सत्य | सत्य |
| मन्ये | Manye | I think | मैं मानता हूँ | मी मानतो |
| यत् | Yat | which | जो कुछ भी | जे काही |
| माम् | Maam | to me | मेरे प्रति | मला |
| वदसि | Vadasi | You say | आप कहते हैं | तुम्ही सांगत आहात |
| केशव | Keshava | O Krishna! | हे श्रीकृष्ण ! | हे केशवा ! |
| न | Na | not | न | नाही |
| हि | Hi | verily | ही | सुद्धा |
| ते | Te | Your | आपके | तुमच्या |
| भगवन् | Bhagavan | O Blesses Lord! | हे भगवान् ! | हे भगवन् ! |
| व्यक्तिम् | Vyaktim | manifestation | लीलामय स्वरुपको | (लीलामय) स्वरूपाला |
| विदुः | ViduH | know | जानते हैं | जाणतात |
| देवाः | DevaaH | gods | देवता | देव |
| न | Na | not | न | नाही |
| दानवाः | DaanavaaH | demons | दानव | दानव |

अन्वय :-

हे केशव ! यत् माम् (त्वम्) वदसि, (तत्) एतत् सर्वम् (अहम्) ऋतम् मन्ये । हे भगवन् ! देवाः, दानवाः (वा) ते व्यक्तिम् न हि विदुः ॥ १० - १४ ॥

English translation:-

O Krishna! I respect and regard all this that You say to me as true and valid. Verily, O Blessed Lord, neither the gods nor demons know Your manifestation.

हिन्दी अनुवाद :-

हे श्रीकृष्ण ! जो कुछ भी मेरे प्रति आप कहते हैं, इस सब को मैं सत्य मानता हूँ । हे भगवान् ! आप के लीलामय स्वरुप को न तो दानव जानते हैं और न देवता ही ।

मराठी भाषान्तर :-

हे केशवा, तुम्ही मला जे सांगत आहात ते सर्व मी सत्य मानतो. हे भगवन ! देव अथवा दानव तुमचे (मूळ) स्वरुप जाणत नाहीत.

विनोबांची गीताई :-

मानितों सत्य हे सारें स्वयें जें सांगसी मज़

देव दानव कोणी हि तुझें रुप न ज़ाणती ॥ १० - १४ ॥

स्वयम् एव आत्मना आत्मानम् वेत्थ त्वम् पुरुष - उत्तम् ।

भूत भावन भूत् - ईश देवदेव जगत् - पते ॥ १० - १५ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| स्वयम् | Svayam | Yourself | स्वयं | स्वतः |
| एव | Eva | verily | ही | केवळ |
| आत्मना | Aatmanaa | By Yourself | अपने से | स्वतः |
| आत्मानम् | Aatmaanam | Yourself | अपने को | स्वतःला |
| वेत्थ (वेद्-थ) | Vettha | know | जानते हैं | जाणत आहात |
| त्वम् | Tvam | You | आप | आपण |
| पुरुष-उत्तम् | Purushottam | O best of men | हे पुरुषोत्तम ! | हे पुरुषोत्तमा ! |
| भूतभावन | Bhuta-Bhaavana | O source of beings | हे भूतों को उत्पन्न करनेवाले ! | हे प्राणिमात्रांना उत्पन्न करणाऱ्या ! |
| भूत्-ईश | Bhutesha | O Lord of beings | हे भूतों के ईश्वर ! | हे प्राणिमात्रांच्या ईश्वरा ! |
| देव - देव | Deva - Deva | O God of gods | हे देवों के देव ! | हे देवाधिदेवा ! |
| जगत् - पते | Jagat-Pate | O Ruler of the world | हे जगत् के स्वामी ! | हे जगत् स्वामी ! |

अन्वय :-

हे पुरुषोत्तम् ! भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ! त्वम् स्वयम् एव आत्मना आत्मानम् वेत्थ ॥ १० - १५ ॥

English translation:-

Verily You alone know Yourself, O Best of men, O Source of beings, O Lord of beings, O God of gods, O Ruler of the world.

हिन्दी अनुवाद :-

हे भूतों को उत्पन्न करनेवाले ! हे भूतों के ईश्वर ! हे देवों के देव ! हे जगत् के स्वामी ! हे पुरुषोत्तम ! आप स्वयं ही अपने से अपने को जानते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

हे पुरुषोत्तम ! प्राणिमात्रांचे उत्पादक , प्राणिमात्रांचे ईश्वर , देवाधिदेव आणि जगत्पते ! आपण स्वतःच आपल्याला जाणता .

विनोबांची गीताई :-

ज़ाणसी तें तुझें तूं चि प्रत्यक्ष पुरुषोत्तमा
देव देवा जगन्नाथा भूतेशा भूत - भावना ॥ १० - १५ ॥

वक्तुम् अर्हसि अशेषेण दिव्याः हि आत्मविभूतयः ।

याभिः विभूतिभिः लोकान् इमान् त्वम् व्याप्य तिष्ठसि ॥ १० - १६ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| वक्तुम् | Vaktum | to speak | कहने में | सांगण्यास |
| अर्हसि | Arhasi | You deserve | समर्थ हैं | समर्थ आहात |
| अशेषेण | AshesheNa | without reserve | सम्पूर्णता से | संपूर्णपणे |
| दिव्याः | DivyaaH | divine | दिव्य | दिव्य |
| हि | Hi | indeed | ही | केवळ |
| आत्मविभूतयः | Aatma-VibhutayaH | Your glories | अपनी विभूतियों को | आपल्या विभूती |
| याभिः | YaabhiH | by which | जिन | ज्यांनी |
| वि-भूतिभिः | VibhutibhiH | by glories | विभूतियों के द्वारा | विभूतींच्या द्वारे |
| लोकान् | Lokaan | worlds | सब लोकों को | सर्व लोकांना |
| इमान् | Imaan | these | इन | या |
| त्वम् | Tvam | You | आप | आपण |
| व्याप्य | Vyaapya | having pervaded | व्याप्त कर | व्यापून |
| तिष्ठसि | Tishthasi | exist | स्थित हैं | स्थित आहात |

अन्वय :-

( अतः ) याभिः विभूतिभिः त्वम् इमान् लोकान् व्याप्य तिष्ठसि , ( ताः ) दिव्याः आत्मविभूतयः हि अशेषेण वक्तुम् अर्हसि ॥ १० - १६ ॥

English translation:-

You alone deserve to speak without reserve of Your divine glories, by which glories pervading these worlds You exist.

हिन्दी अनुवाद :-

इसलिये आप ही उन अपनी दिव्य विभूतियों को सम्पूर्णता से कहने में समर्थ हैं , जिन विभूतियों के द्वारा आप इन सब लोकों को व्याप्त कर स्थित हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

म्हणून ज्या विभूतींच्या योगाने आपण या सर्व विश्वाला व्यापून राहिला आहात , त्या आपल्या दिव्य विभूती सम्पूर्णपणे सांगायला आपणच समर्थ आहात .

विनोबांची गीताई :-

विभूति आपुल्या दिव्य मज़ निःशेष सांग तूं
ज्यांनीं हें विश्व तूं सारें राहिलास भरुनियां ॥ १० - १६ ॥

कथम् विद्याम् अहम् योगिन् त्वाम् सदा परिचिन्तयन् ।

केषु केषु च भावेषु चिन्त्यः असि भगवन् मया ॥ १० - १७ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| कथम् | Katham | how | किस प्रकार | कोणत्या प्रकारे |
| विद्याम् | Vidyaam | may know | जानूँ | जाणू |
| अहम् | Aham | I | मैं | मी |
| योगिन् | Yogin | O Yogin! | हे योगेश्वर ! | हे योगेश्वरा ! |
| त्वाम् | Tvaam | You | आप को | आपणास |
| सदा | Sadaa | always | निरन्तर | निरंतर |
| परिचिन्तयन् | Pari-Chintayan | meditating | चिन्तन करता हुआ | चिंतन करीत |
| केषु | Keshu | in what | किन | कोणत्या |
| केषु | Keshu | in what | किन | कोणत्या |
| च | Cha | and | और | आणि |
| भावेषु | Bhaaveshu | in aspects | भावों में | भावांमध्ये |
| चिन्त्यः | ChintyaH | to be thought of | चिन्तन करने | चिंतन करण्यास योग्य |
| असि | Asi | (You) are | योग्य हैं | आहात |
| भगवन् | Bhagavan | O Blessed Lord! | हे भगवन् ! | हे भगवन् ! |
| मया | Mayaa | by me | मेरे द्वारा | माझ्याकडून |

अन्वय :-

हे योगिन् ! सदा परिचिन्तयन् अहम् त्वाम् कथम् विद्याम् ? हे भगवन् ! केषु केषु च भावेषु ( त्वम् ) मया चिन्त्यः असि ? ॥ १० - १७ ॥

English translation:-

O Yogin, how may I know You, through constant meditation? O Blessed Lord, in what various aspects are You to be thought of by me?

हिन्दी अनुवाद :-

हे योगेश्वर ! मैं किस प्रकार निरन्तर चिन्तन करता हुआ आप को जानूँ और हे भगवन् ! आप किन - किन भावों में मेरे द्वारा चिन्तन करने योग्य हैं ?

मराठी भाषान्तर :-

हे योगेश्वर ! सतत आपले चिंतन करीत असता मी आपल्याला कसे जाणावे ? कोणकोणत्या स्वरूपांमध्ये मी आपले चिंतन करावे ?

विनोबांची गीताई :-

योगेश्वरा कसें ज़ाणूं चिंतनीं चिंतनीं तुज़
कोण्या कोण्या स्वरुपांत करावें ध्यान मी तुझें ॥ १० - १७ ॥

विस्तरेण आत्मनः योगम् विभूतिम् च जनार्दन ।

भूयः कथय तृप्तिः हि शृण्वतः न अस्ति मे अमृतम् ॥ १० - १८ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| विस्तरेण | VistareNa | in detail | विस्तारपूर्वक | विस्तारपूर्वक |
| आत्मनः | AatmanaH | Your | अपनी | आपली |
| योगम् | Yogam | yoga | योगशक्ति को | योगशक्ती |
| विभूतिम् | Vibhutim | manifestation | विभूति को | विभूती |
| च | Cha | and | और | आणि |
| जनार्दन | Janaardana | O Krishna! | हे जनार्दन ! | हे जनार्दना ! |
| भूयः | BhuyaH | again | फिर भी | आणखी |
| कथय | Kathaya | tell | कहिये | सांगावे |
| तृप्तिः | TriptiH | contentment | तृप्ति | तृप्ती |
| हि | Hi | for | क्योंकि | कारण |
| शृण्वतः | ShruNvataH | (of) hearing | सुनते हुए | ऐकली असता |
| न | Na | not | नहीं होती अर्थात् | नाही |
| अस्ति | Asti | is | सुनने की उत्कण्ठा बनी ही रहती है | आहे |
| मे | Me | of me | मेरी | माझी |
| अमृतम् | Amritam | nectar | अमृतमय वचनों को | अमृतमय ( वचने ) |

अन्वय :-

हे जनार्दन ! आत्मनः योगम् विभूतिम् च भूयः विस्तरेण कथय । ( एतत् ) अमृतम् शृण्वतः हि मे तृप्तिः न अस्ति ॥ १० - १८ ॥

English translation:-

O Krishna! Tell me again in detail of Your yogic powers and manifestations, for there is no satiety for me in hearing the nectarine.

हिन्दी अनुवाद :-

हे जनार्दन ! अपनी योगशक्ति को और विभूति को फिर भी विस्तारपूर्वक कहिये, क्योंकि आप के अमृतमय वचनों को सुनते हुए मेरी तृप्ति नहीं होती अर्थात् सुनने की उत्कण्ठा बनी ही रहती है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे जनार्दना ! आपल्या योगशक्तीचे आणि विभूतींचे आणखी एकदा मला विस्ताराने वर्णन करून सांगा . आपली अमृतमय वचने ऐकूनही माझे समाधान होत नाही .

विनोबांची गीताई :-

त्या विभूति तसा योग आपुला तो सविस्तर
पुन्हां सांग नव्हे तृप्ति सेवितां वचनामृत ॥ १० - १८ ॥

श्री भगवान् उवाच ।

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्याः हि आत्मविभूतयः ।

प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ न अस्ति अन्तः विस्तरस्य मे ॥ १० - १९ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| श्री भगवान् | Shree Bhagavaana | The Blessed Lord | श्री भगवान् ने | श्री भगवान |
| उवाच | Uvaacha | said | कहा | म्हणाले |
| हन्त | Hanta | well then | अब मैं जो | फारच छान ! |
| ते | Te | to you | तुम्हारे लिये | तुझ्यासाठी |
| कथयिष्यामि | Katha-yishyaami | I will declare | कहूंगा | मी सांगेन |
| दिव्याः | DivyaaH | divine | दिव्य | दिव्य |
| हि | Hi | indeed | क्योंकि | कारण |
| आत्मविभूतयः | Aatma-VibhutayaH | My glories | मेरी विभूतियाँ | माझ्या विभूती आहेत |
| प्राधान्यतः | PraadhaanyataH | In their prominence | प्रधानता से | प्राधान्यपूर्वक |
| कुरुश्रेष्ठ | Kuru-ShreshtaH | O best of the Kurus | हे कुरुश्रेष्ठ ! | हे कुरुश्रेष्ठा ! |
| न | Na | not | नहीं | नाही |
| अस्ति | Asti | is | है | आहे |
| अन्तः | AntaH | end | अन्त | शेवट |
| विस्तरस्य | Vistarasya | of detail | विस्तार का | विस्ताराला |
| मे | Me | My manifestation | मेरे | माझ्या |

अन्वय :-

श्री भगवान् उवाच - हे कुरुश्रेष्ठ ! हन्त , दिव्याः आत्मविभूतयः प्राधान्यतः ते कथयिष्यामि , मे विस्तरस्य हि अन्तः न अस्ति ॥ १० - १९ ॥

English translation:-

The Blessed Lord said, "Well then, I will declare to you My divine glories according to their prominence, O best of the Kurus; there is no end to the details of My manifestations."

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान् बोले, " हे कुरुश्रेष्ठ ! अब मैं जो मेरी दिव्य विभूतियाँ हैं , उनको तुम्हारे लिये प्रधानता से कहूंगा ; क्योंकि मेरे विस्तार का अन्त नहीं है ।"

मराठी भाषान्तर :-

श्रीभगवान म्हणाले , " छान ! आता तुला मी आपल्या मुख्य - मुख्य विभूती सांगतो कारण की त्यांच्या विस्ताराला अंतच नाही ."

विनोबांची गीताई :-

बरें मी सांगतों दिव्य मुख्य मुख्य चि त्या तुज
माझा विभूति विस्तार न संपे चि कुठें कधीं ॥ १० - १९ ॥

अहम् आत्मा गुडाकेश सर्व भूताशयस्थितः ।

अहम् आदिः च मध्यम् च भूतानाम् अन्तः एव च ॥ १० - २० ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| अहम् | Aham | I | मैं | मी ( आहे ) |
| आत्मा | Aatmaa | the Self | सब का आत्मा हूँ | सर्वांचा आत्मा |
| गुडाकेश | GudaakeshaH | O conqueror of sleep! | हे अर्जुन ! | हे अर्जुना ! |
| सर्व | Sarva | all | सब | सर्व |
| भूताशयस्थितः | Bhutaashaya-SthitaH | seated in the heart of beings | भूतों के हृदय में स्थित हूँ | प्राणिमात्रांच्या हृदयामध्ये स्थित असणारा |
| अहम् | Aham | I | मैं | मी |
| आदिः | AadiH | the beginning / source | आदि | आदी |
| च | Cha | and | और | आणि |
| मध्यम् | Madhyam | the middle | मध्य | मध्य |
| च | Cha | and | और | आणि |
| भूतानाम् | Bhutaanaam | of (all) beings | सम्पूर्ण भूतों का | सर्व प्राणिमात्रांचा |
| अन्तः | AntaH | the end | अन्त | शेवट |
| एव | Eva | also | भी हूँ | सुद्धा आहे |
| च | Cha | and | और | तसेच |

अन्वय :-

हे गुडाकेश ! अहम् सर्व भूताशयस्थितः आत्मा , भूतानाम् आदिः च मध्यम् च अन्तः च अहम् एव ( अस्मि ) ॥ १० - २० ॥

English translation:-

O conqueror of sleep! I am the Self, seated in the heart of all beings; I am the beginning, the middle and also the end of all beings.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! मैं सब भूतों के हृदय में स्थित सबका आत्मा हूँ तथा सम्पूर्ण भूतों का आदि , मध्य और अन्त भी मैं ही हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! मी सर्व प्राण्यांच्या हृदयांत राहणारा आत्मा आहे . प्राणिमात्रांचा आदी , मध्य व अंत सुद्धा मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

राहतों आत्म - रुपानें सर्वांच्या हृदयांत मी

भूत - मात्रास मी मूळ मध्य मी मी चि शेंवट ॥ १० - २० ॥

आदित्यानाम् अहम् विष्णुः ज्योतिषाम् रविः अंशुमान् ।

मरीचिः मरूताम् अस्मि नक्षत्राणाम् अहम् शशी ॥ १० - २१ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| आदित्यानाम् | Aadityaanaam | of Adityas | अदिति के बारह पुत्रों में | अदितीच्या बारा पुत्रांपैकी |
| अहम् | Aham | I | मैं | मी |
| विष्णुः | VishNuH | Vishnu | विष्णु हूँ | विष्णू आहे |
| ज्योतिषाम् | Jyotishaam | Of luminaries | ज्योतियों में | ताऱ्यांमध्ये |
| रविः | RaviH | Sun | सूर्य हूँ | सूर्य मी आहे |
| अंशुमान् | Amshumaan | radiant | किरणोंवाला | किरण असणारा |
| मरीचिः | MareechiH | Mareechi | मरीचि हूँ | तेज ( मी आहे ) |
| मरूताम् | Marutaam | of winds | वायुदेवताओं में | (एकोणपन्नास) वायुदेवतांमध्ये |
| अस्मि | Asmi | I am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| नक्षत्राणाम् | NakshatraaNaam | among the asterisms | नक्षत्रों का अधिपति | नक्षत्रांमध्ये |
| अहम् | Aham | I | मैं | मी ( आहे ) |
| शशी | Shashee | moon | चन्द्रमा | चंद्र |

अन्वय :-

आदित्यानाम् विष्णुः अहम्, ज्योतिषाम् अंशुमान् रविः अहम्, मरूताम् मरीचिः, नक्षत्राणाम् शशी (च अहम्) अस्मि ॥ १० - २१ ॥

English translation:-

Of Adityas I am Vishnu, of luminaries I am the radiant Sun. I am the Mareechi of winds and I am the moon of asterisms.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं अदिति के बारह पुत्रों में विष्णु और ज्योतियों में किरणोंवाला सूर्य हूँ तथा मैं वायुदेवताओं में मरीचि हूँ और नक्षत्रों का अधिपति चन्द्रमा हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

आदित्यांमध्ये विष्णू मी, ताऱ्यांमध्ये प्रकाशमान सूर्य मी, वायुदेवतांचे तेज आणि नक्षत्रांचा अधिपती चंद्र मीच आहे.

विनोबांची गीताई :-

आदित्यांत महा विष्णु ज्योतिष्मंतांत सूर्य मी
मरीचि मुख्य वायूंत मी नक्षत्रांत चंद्रमा ॥ १० - २१ ॥

वेदानाम् सामवेदः अस्मि देवानाम् अस्मि वासवः ।

इन्द्रियाणाम् मनः च अस्मि भूतानाम् अस्मि चेतना ॥ १० - २२ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| वेदानाम् | Vedaanaam | Of Vedas | वेदों में | वेदांमध्ये |
| सामवेदः | SaamavedaaH | Saamaveda | सामवेद हूँ | सामवेद |
| अस्मि | Asmi | I am | मैं | मी आहे |
| देवानाम् | Devaanaam | of gods | देवों में | देवांमध्ये |
| अस्मि | Asmi | I am | हूँ | ( मी ) आहे |
| वासवः | VaasavaH | the Indra God | इन्द्र | इंद्र |
| इन्द्रियाणाम् | IndriyaaNaam | of the senses | इन्द्रियों में | इंद्रियांमध्ये |
| मनः | ManaH | (I am) the mind | मन हूँ | मन |
| च | Cha | and | और | आणि |
| अस्मि | Asmi | I am | हूँ | ( मी ) आहे |
| भूतानाम् | Bhutaanaam | of (all) living beings | भूतप्राणियों में | प्राणिमात्रांत |
| अस्मि | Asmi | I am | हूँ | ( मी ) आहे |
| चेतना | Chetanaa | the Consciousness | चेतना अर्थात् जीवनशक्ति | जीवन शक्ती |

अन्वय :-

वेदानाम् सामवेदः (अहम्) अस्मि, देवानाम् वासवः अस्मि, इन्द्रियाणाम् मनः अस्मि, भूतानाम् चेतना च अस्मि ॥ १० - २२ ॥

English translation:-

Of the Vedas I am the Saamaveda, I am Indra among gods, of the senses I am the mind and of living beings I am the Consciousness.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं वेदों में सामवेद हूँ, देवों में इन्द्र हूँ, इन्द्रियों में मन हूँ और भूतप्राणियों में चेतना अर्थात् जीवनशक्ति हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

वेदांमध्ये सामवेद, देवांमध्ये इंद्र, इंद्रियांमध्ये मन आणि प्राणिमात्रांमध्ये चैतन्य मीच आहे.

विनोबांची गीताई :-

मी साम वेद वेदांत असें देवांत इंद्र मी
चेतना मी चि भूतांत मन तें इंद्रियांत मी ॥ १० - २२ ॥

रुद्राणाम् शंकरः च अस्मि वित्त-ईशः यक्षरक्षसाम् ।

वसूनाम् पावकः च अस्मि मेरुः शिखरिणाम् अहम् ॥ १० - २३ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| रुद्राणाम् | RudraaNaam | Of Rudras | एकादश रुद्रों में | अकरा रुद्रांपैकी |
| शंकरः | ShankaraH | Shankara, the God of destruction | शंकर | शंकर |
| च | Cha | and | और | तसेच |
| अस्मि | Asmi | I am | मैं हूँ | मी आहे |
| वित्त-ईशः | VittyeshaH | Kubera, the God of money | धन का स्वामी ( कुबेर ) | धनाचा स्वामी कुबेर |
| यक्षरक्षसाम् | Yaksha-Rakshasaam | Of Yakshas and Rakshasas | यक्ष तथा राक्षसों में | यक्ष आणि राक्षस गणांमध्ये |
| वसूनाम् | Vasunaam | Of Vasus | आठ वसुओं में | आठ वसूंमध्ये |
| पावकः | PaavakaH | the Agni | अग्नि | अग्नी |
| च | Cha | and | तथा | आणि |
| अस्मि | Asmi | I am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| मेरुः | MeruH | Meru | सुमेरु पर्वत | मेरु पर्वत |
| शिखरिणाम् | ShikhariNaam | of mountains | शिखरवाले पर्वतों में | पर्वतांमध्ये |
| अहम् | Aham | I | मैं हूँ | मी ( आहे ) |

अन्वय :-

रुद्राणाम् शंकरः , यक्षरक्षसाम् च वित्त-ईशः अस्मि , वसूनाम् पावकः , शिखरिणाम् मेरुः च अहम् अस्मि ॥ १० - २३ ॥

English translation:-

Of the Rudras I am Shankara (the God of destruction), of the Yakshas and Rakshasas I am the Kubera (treasurer of wealth), of the Vasus I am the Fire God (Agni) and of mountains I am Meru.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं एकादश रुद्रों में शंकर हूँ और यक्ष तथा राक्षसों में धन का स्वामी कुबेर हूँ। मैं आठ वसुओं में अग्नि हूँ और शिखरवाले पर्वतों में सुमेरु पर्वत हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

( अकरा ) रुद्रांमध्ये शंकर , यक्ष राक्षसांमध्ये कुबेर , ( आठ ) वसूंमध्ये अग्नी आणि पर्वतांमध्ये मेरू मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

कुबेर यक्ष रक्षांत मी रुद्रांत सदाशिव
वसूंत मी असें अग्नि असें उंचांत मेरु मी ॥ १० - २३ ॥

पुरोधसाम् च मुख्यम् माम् विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् ।

सेनानीनाम् अहम् स्कन्दः सरसाम् अस्मि सागरः ॥ १० - २४ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| पुरोधसाम् | Purodhasaam | of household priests | पुरोहितों में | पुरोहितांमध्ये |
| च | Cha | and | और | आणि |
| मुख्यम् | Mukham | chief | मुखिया | मुख्य असा |
| माम् | Maam | Me | मुझ को | मला |
| विद्धि | Viddhi | know | जान | तू समज |
| पार्थ | Paartha | O Arjuna! | हे पार्थ ! | हे पार्था ! |
| बृहस्पतिम् | Brihaspatim | The Brihaspati | बृहस्पति | बृहस्पती |
| सेनानीनाम् | Senaaneenaam | among the army generals | सेनापतियों में | सेनापतींमध्ये |
| अहम् | Aham | I | मैं हूँ | मी ( आहे ) |
| स्कन्दः | SkandaH | the Skanda | स्कन्द | स्कंद म्हणजे कार्तिकस्वामी |
| सरसाम् | Sarasaam | of lakes | जलाशयों में | जलाशयांमध्ये |
| अस्मि | Asmi | I am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| सागरः | SaagaraH | the ocean | समुद्र | समुद्र |

अन्वय :-

हे पार्थ! पुरोधसाम् च मुख्यम् बृहस्पतिम् माम् विद्धिः। सेनानीनाम् स्कन्दः, सरसाम् सागरः अहम् अस्मि ॥ १० - २४ ॥

English translation:-

O Arjuna, among the household priests, know me to be the chief Brihaspati, of the generals of army I am Skanda, of lakes I am the ocean.

हिन्दी अनुवाद :-

पुरोहितों में मुखिया बृहस्पति मुझ को जान। हे पार्थ! मैं सेनापतियों में स्कन्द और जलाशयों में सागर हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! तू मला पुरोहितांमध्ये मुख्य बृहस्पती समज. सेनापतींमध्ये स्कंद (कार्तिकेय) आणि जलाशयांमध्ये सागर मीच आहे.

विनोबांची गीताई :-

पुरोहितांत तूं ज्ञाण तो मी बृहस्पति
सेनानींत तसा स्कंद जल राशींत सागर ॥ १० - २४ ॥

महत् ऋषीणाम् भृगुः अहम् गिराम् अस्मि एकम् अक्षरम् ।

यज्ञानाम् जप यज्ञः अस्मि स्थावराणाम् हिमालयः ॥ १० - २५ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| महत् | Mahat | great | महान | महान |
| ऋषीणाम् | RisheeNaam | of sages | ऋषियों मे | ऋषींमध्ये |
| भृगुः | BhriguH | Bhrigu | भृगु | भृगू |
| अहम् | Aham | I | मैं हूँ | मी ( आहे ) |
| गिराम् | Giraam | among words | शब्दों में | शब्दांमध्ये |
| अस्मि | Asmi | I am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| एकम् | Ekam | one | एक | एक |
| अक्षरम् | Aksharam | syllable | अक्षर अर्थात् ओंकार | अक्षर म्हणजे ओंकार |
| यज्ञानाम् | Yadnyaanaam | of sacrifices | सब प्रकार के यज्ञों में | यज्ञांमध्ये |
| जप | Japa | chant | जप | जप |
| यज्ञः | YadnyaH | sacrifice | यज्ञ | यज्ञ |
| अस्मि | Asmi | I am | मैं हूँ | मी आहे |
| स्थावराणाम् | Sthaava-raaNaam | of immovables | स्थिर रहनेवालों में | स्थिर राहणाऱ्यांमध्ये |
| हिमालयः | HimaalayaH | The Himalaya mountain | हिमालय पहाड ( मैं हूँ ) | हिमालय पर्वत ( मी आहे ) |

अन्वय :-

महत् - ऋषीणाम् भृगुः , गिराम् एकम् अक्षरम् अहम् अस्मि , यज्ञानाम् जपयज्ञः , स्थावराणाम् हिमालयः ( च ) अस्मि ॥ १० - २५ ॥

English translation:-
Of the great sages I am Bhrigu, of utterances I am the monosyllable "Om" i.e. ॐ, of sacrifices I am the sacrifice of chant and of immovables I am the Himalaya (the house of snow).

हिन्दी अनुवाद :-

मैं महर्षियों में भृगु और शब्दों में एक अक्षर अर्थात् ओंकार सब प्रकार के यज्ञों में जपयज्ञ और स्थिर रहनेवालों में हिमालय पहाड हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

महर्षींमध्ये भृगु , वाणीमध्ये एकाक्षर म्हणजेच ॐ मी आहे . यज्ञांमध्ये जपयज्ञ आणि स्थिर राहणाऱ्यांमधे हिमालय पर्वत मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

मी एकाक्षर वाणींत महर्षींत असें भृगु
जप मी सर्व यज्ञांत मी स्थिरांत हिमालय ॥ १० - २५ ॥

अश्वत्थः सर्व वृक्षाणाम् देव ऋषीणाम् च नारदः ।

गन्धर्वाणाम् चित्ररथः सिद्धानाम् कपिलः मुनिः ॥ १० - २६ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| अश्वत्थः | AshvathaH | Pipal tree | पीपल का वृक्ष , मैं हूँ | पिंपळ वृक्ष |
| सर्व | Sarva | all | सब | सर्व |
| वृक्षाणाम् | Vrukshaa-Naam | of trees | वृक्षों में | वृक्षांमध्ये |
| देव | Deva | divine | देव | देव |
| ऋषीणाम् | Risheenaam | among sages | ऋषियों मे | ऋषींमध्ये |
| च | Cha | and | और | आणि |
| नारदः | NaaradaH | Naarada | नारद मुनि , मैं हूँ | नारद मुनी |
| गन्धर्वाणाम् | Gandhar-vaaNaam | of Gandharvas | गन्धर्वों में | गंधर्वांमध्ये |
| चित्ररथः | ChitrarathaH | Chitraratha | चित्ररथ मैं हूँ | चित्ररथ |
| सिद्धानाम् | Siddhaanaam | among the perfected souls | सिद्धों में | सिद्धांमध्ये |
| कपिलः | KapilaH | Kapila | कपिल | कपिल |
| मुनिः | MuniH | sage | मुनि मैं हूँ | मुनी ( मी आहे ) |

अन्वय :-

सर्व - वृक्षाणाम् अश्वत्थः , देव - ऋषीणाम् च नारदः , गन्धर्वाणाम् चित्ररथः , सिद्धानाम् कपिलः मुनिः ( अहम् अस्मि ) ॥ १० - २६ ॥

English translation:-

Of all trees I am Pipal tree, of all divine sages I am Naarada, of Gandharvas I am Chitraratha, of the perfected souls I am the sage Kapila.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष , देवर्षियों में नारद मुनि , गन्धर्वों में चित्ररथ और सिद्धों में कपिल मुनि हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

सर्व वृक्षांमध्ये अश्वत्थ , देवर्षींमध्ये नारद , गंधर्वांमध्ये चित्ररथ आणि सिद्धांमध्ये कपिलमुनी मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

सर्व वृक्षांत अश्वत्थ मी देवर्षींत नारद
मी चित्ररथ गंधर्वीं सिद्धीं कपिल मी मुनि ॥ १० - २६ ॥

उच्चैःश्रवसम् अश्वानाम् विद्धि माम् अमृतोद्भवम् ।

ऐरावतम् गजेन्द्राणाम् नराणाम् च नराधिपम् ॥ १० - २७ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| उच्चैःश्रवसम् | UchchaiH-Shrava- Sum | UchchaiH-Shravas | उच्चैःश्रवा | उच्चैःश्रवा नावाचा घोडा |
| अश्वानाम् | Ashvaanaam | among horses | घोडों में | घोड्यांमध्ये |
| विद्धि | Viddhi | know | जान | तू समज |
| माम् | Maam | Me | मुझ को | मला |
| अमृतोद्भवम् | Amrito-tbhavam | born of nectar | अमृत के साथ उत्पन्न होनेवाला | अमृतासह उत्पन्न होणारा |
| ऐरावतम् | Airaavatam | Airaavata | ऐरावत नामक हाथी मैं हूँ | ऐरावत नावाचा हत्ती |
| गजेन्द्राणाम् | Gajendraa-Naam | among lordly elephants | हाथियों में | श्रेष्ठ हत्तींमध्ये |
| नराणाम् | NaraaNaam | among men | मनुष्यों में | मनुष्यांमध्ये |
| च | Cha | and | और | तसेच |
| नराधिपम् | Naraadhipam | the King | राजा मैं हूँ | राजा |

अन्वय :-

अश्वानाम् अमृतोद्भवम् उच्चैःश्रवसम् , गजेन्द्राणाम् ऐरावतम् , नराणाम् नराधिपम् च माम् विद्धि ॥ १० - २७ ॥

English translation:-

Of horses know Me as UchchaiH-Shravas born of nectar, of lordly elephants Airavata and of men the monarch.

हिन्दी अनुवाद :-

घोडों में अमृत के साथ उत्पन्न होनेवाला उच्चैःश्रवा नामक घोडा , श्रेष्ठ हाथियों में ऐरावत नामक हाथी और मनुष्यों में राजा मुझ को जान लो ।

मराठी भाषान्तर :-

घोड्यांमध्ये अमृताबरोबर ( समुद्र - मंथनातून ) उत्पन्न झालेला उच्चैःश्रवा , हत्तींमध्ये ( इंद्राचा ) ऐरावत आणि मनुष्यांमध्ये राजा मीच आहे ; असे तू समज .

विनोबांची गीताई :-

अश्वीं उच्चैश्रवा ज़ो मी निघालों अमृतांतुनी
ऐरावत गजेंद्रांत मी नरांत नराधिप ॥ १० - २७ ॥

आयुधानाम् अहम् वज्रम् धेनूनाम् अस्मि कामधुक् ।

प्रजनः च अस्मि कन्दर्पः सर्पाणाम् अस्मि वासुकिः ॥ १० - २८ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| आयुधानाम् | Aayudhaanaam | among weapons | शस्त्रों में | शस्त्रांमध्ये |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं हूँ | मी ( आहे ) |
| वज्रम् | Vajram | the thunderbolt | वज्र | वज्रायुध |
| धेनूनाम् | Dhenunaam | among cows | गौओं में | गाईमध्ये |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| कामधुक् | Kaamadhuk | Kamadhuk (Surabhi) which yields all desires | कामधेनु | कामधेनू |
| प्रजनः | Pajanachaasmi | the progenitor | सन्तान की उत्पत्ति का हेतु | प्रजोपत्तीचे कारण |
| च | Cha | and | और | आणि |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| कन्दर्पः | KandarpaH | Kamadev (god of sex) | कामदेव | कामदेव |
| सर्पाणाम् | SarpaaNaam | among serpents | सर्पों में | सर्पांमधे |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| वासुकिः | VaasukiH | Vasuki | सर्पराज वासुकि | सर्पराज वासुकी |

अन्वय :-

आयुधानाम् वज्रम् अहम् (अस्मि), धेनूनाम् कामधुक् (अहम्) अस्मि, प्रजनः कन्दर्पः (अहम्) अस्मि, सर्पाणाम् वासुकिः च (अहम्) अस्मि ॥ १० - २८ ॥

English translation:-

Of weapons I am the thunderbolt, of cows I am Kamadhuk; I am Kamadeva of the progenitors, of serpents I am Vasuki.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं शस्त्रों में वज्र और गौओं में कामधेनु हूँ। सन्तान की उत्पत्ति का हेतु कामदेव हूँ और सर्पों में सर्पराज वासुकि हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

शस्त्रांमध्ये वज्र, गाईंमध्ये कामधेनू, प्रजा उत्पन्न करणारा कामदेव आणि सर्पांमध्ये वासुकी मीच आहे.

विनोबांची गीताई :-

मी काम - धेनु गाईंत आयुधीं वज्र मी असें
उत्पत्ति - हेतु मी काम मी सर्पोत्तम वासुकि ॥ १० - २८ ॥

अनन्तः च अस्मि नागानाम् वरुणः यादसाम् अहम् ।

पितृणाम् अर्यमा च अस्मि यमः संयमताम् अहम् ॥ १० - २९ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| अनन्तः | AnantaH | Ananta | शेषनाग | अनन्त ( शेष नाग ) |
| च | Cha | and | और | आणि |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| नागानाम् | Naagaanaam | among snakes | नागों में | नागांमध्ये |
| वरुणः | VaruNaH | Varuna | जलचरों का अधिपति | वरुण |
| यादसाम् | Yaadasaam | among water deities | वरुण देवता | जलचरांमध्ये |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं हूँ | मी ( आहे ) |
| पितृणाम् | PriturNaam | among ancestors | पितरों में | पितरांमध्ये |
| अर्यमा | Aryamaa | Aryama | अर्यमा नामक पितर | अर्यमा नावाचा पितर |
| च | Cha | and | और | आणि |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | मी आहे |
| यमः | YamaH | Yama | यमराज | यमराज |
| संयमताम् | Saiyamataam | among controllers | शासन करनेवालों में | नियमन करणाऱ्यांमध्ये |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं हूँ | मी ( आहे ) |

अन्वय :-

नागानाम् अनन्तः , यादसाम् वरुणः च अहम् अस्मि , पितृणाम् अर्यमा च , संयमताम् यमः च अहम् अस्मि ॥ १० - २९ ॥

English translation:-

I am Ananta among snakes, I am Varuna among water deities, among forefathers I am Aryama and I am Yama among controllers.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं नागों में शेषनाग और जलचरों का अधिपति वरुण देवता हूँ और पितरों में अर्यमा नामक पितर तथा शासन करनेवालों में यमराज मैं हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

नागांमध्ये अनंत ( शेषनाग ) , जलचारांमध्ये वरुणदेव , पितरांमध्ये अर्यमा आणि नियमन करणाऱ्यांमध्ये यमराज मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

नागांत शेष मी थोर जळीं वरुण देवता
पितरीं अर्यमा तो मी ओढणारांत मी यम ॥ १० - २९ ॥

**प्रह्लादः च अस्मि दैत्यानाम् कालः कलयताम् अहम् ।**

**मृगाणाम् च मृगेन्द्रः अहम् वैनेतयः च पक्षिणाम् ॥ १० - ३० ॥**

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| प्रह्लादः | PrahalaadaH | Prahalaada | प्रह्लाद | प्रल्हाद |
| च | Cha | and | और | आणि |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | मी आहे |
| दैत्यानाम् | Daityaanaam | among Daityas | दैत्यों में | दैत्यांमध्ये |
| कालः | KaalaH | time | समय | समय |
| कलयताम् | Kalayataam | among reckoners | गणना करनेवालों का | गणना करणाऱ्यांमध्ये |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं हूँ | मी ( आहे ) |
| मृगाणाम् | MrigaaNaam | among beasts | पशुओं में | पशूंमध्ये |
| च | Cha | and | और | आणि |
| मृगेन्द्रः | MrigendraH | the lord of beasts / lion | मृगराज सिंह | मृगराज सिंह |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं हूँ | मी ( आहे ) |
| वैनेतयः | VainateyaH | Garuda / Eagle | गरुड | गरूड |
| च | Cha | and | और | आणि |
| पक्षिणाम् | PakshiNaam | among birds | पक्षियों में | पक्ष्यांमध्ये |

अन्वय :-

दैत्यानाम् प्रह्लादः , कलयताम् कालः च अहम् अस्मि , मृगाणाम् च मृगेन्द्रः , पक्षिणाम् वैनेतयः च अहम् ( अस्मि ) ॥ १० - ३० ॥

English translation:-

Among the Daityas I am Prahlada and among reckoners I am the time, among beasts I am lion - the lord of the beasts and eagle among birds.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं दैत्यों में प्रह्लाद और गणना करनेवालों का समय हूँ तथा पशुओं में मृगराज सिंह और पक्षियों में मैं गरुड हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

दैत्यांमध्ये प्रल्हाद , गणना करण्याऱ्यांमध्ये काळ , पशूंमध्ये मृगराज सिंह आणि पक्ष्यांमध्ये गरुड मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

असें दैत्यांत प्रह्लाद मोजणारांत काळ मी
श्वापदांत असें सिंह पक्षांत खग राज मी ॥ १० - ३० ॥

पवनः पवताम् अस्मि रामः शस्त्रभृताम् अहम् ।

झषाणाम् मकरः च अस्मि स्रोतसाम् अस्मि जाह्नवी ॥ १० - ३१ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| पवनः | PavanaH | the wind | वायु | वायू |
| पवताम् | Pavataam | among purifiers | पवित्र करनेवालों में | पवित्र करणाऱ्यांमध्ये |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| रामः | RaamaH | the king Rama (श्रीराम) | श्रीराम | श्रीराम |
| शस्त्रभृताम् | Shastra-bhritaam | of warriors (wielders of weapons) | शस्त्रधारियों में | शस्त्र धारण करणाऱ्यांमध्ये |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं हूँ | मी ( आहे ) |
| झषाणाम् | JhashaaNaam | among fishes | मछलियों में | माशांमध्ये |
| मकरः | MakaraH | shark | मगर | शार्क मासा |
| च | Cha | and | तथा | आणि |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| स्रोतसाम् | Srotasaam | among streams | नदियों में | नद्यांमध्ये |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | मी आहे |
| जाह्नवी | Jaahnavee | the Ganges | श्रीभागीरथी गंगाजी | श्रीभागीरथी गंगा |

अन्वय :-

पवताम् पवनः अस्मि , शस्त्रभृताम् च रामः अहम् ( अस्मि ) झषाणाम् मकरः अस्मि , स्त्रोतसाम् जाह्नवी ( च अहम् ) अस्मि ॥ १० - ३१ ॥

English translation:-

Of purifiers I am the wind, of warriors I am the king Shree-Rama. Of fishes I am the shark and among rivers I am the sacred river Ganges.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं पवित्र करनेवालों में वायु और शस्त्रधारियों में श्रीराम हूँ तथा मछलियों में शार्क नामक मछलि हूँ और नदियों में श्रीभागीरथी गंगाजी हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

पावन करणाऱ्यांमध्ये ( वेगवानांमध्ये ) वायू , शस्त्रधाऱ्यांमध्ये श्रीराम , माशांमध्ये मगर ( शार्क मासा ) आणि नद्यांमध्ये गंगा ( जाह्नवी ) मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

वेगवंतांत मी वायु शस्त्र वीरांत राम मी

मत्स्यांत मी असें नक्र नदी गंगा नद्यांत मी ॥ १० - ३१ ॥

सर्गाणाम् आदिः अन्तः च मध्यम् च एव अहम् अर्जुन ।

अध्यात्मविद्या विद्यानाम् वादः प्रवदताम् अहम् ॥ १० - ३२ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| सर्गाणाम् | SargaaNaam | of creations | सृष्टियों का | सृष्टीचा |
| आदिः | AadiH | the beginning | आदि | आदी |
| अन्तः | AntaH | the end | अन्त | अंत |
| च | Cha | and | तथा | तसेच |
| मध्यम् | Madhyam | the middle state | मध्य | मध्य |
| च | Cha | and | और | आणि |
| एव | Eva | also | भी | सुद्धा |
| अहम् | Aham | (I) am | मैं ही हूँ | मी ( आहे ) |
| अर्जुन | Arjuna | O Arjuna | हे अर्जुन ! | हे अर्जुना ! |
| अध्यात्मविद्या | Adhyaatma-Vidyaa | knowledge of Self | अध्यात्मविद्या अर्थात् ब्रह्मविद्या | अध्यात्मविद्या म्हणजे ब्रह्मविद्या |
| विद्यानाम् | Vidyaanaam | among sciences | विद्याओं में | विद्यांमध्ये |
| वादः | VaadaH | logical reasoning | तत्त्व निर्णय के लिये किया जानेवाला वाद | तत्त्वनिर्णयासाठी केला जाणारा वाद |
| प्रवदताम् | Pravadataam | among arguments | परस्पर विवाद करनेवालों का | परस्पर वाद करणाऱ्यांमध्ये |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं हूँ | मी ( आहे ) |

अन्वय :-

हे अर्जुन ! सर्गाणाम् आदिः मध्यम् च अन्तः च एव अहम् ( अस्मि ), विद्यानाम् अध्यात्मविद्या , प्रवदताम् वादः अहम् ( अस्मि ) ॥ १० - ३२ ॥

English translation:-

O Arjuna, of creations I am the beginning, the end and also the middle state. Among the knowledges I am the knowledge of Self and among arguments I am the logical reasoning.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! सृष्टियों का आदि और अन्त तथा मध्य भी मैं ही हूँ। मैं विद्याओं में अध्यात्मविद्या अर्थात् ब्रह्मविद्या और परस्पर विवाद करनेवालों का तत्व निर्णय के लिये किया जानेवाला वाद हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! सृष्टीचा आदी , अंत आणि मध्य मीच आहे . सर्व विद्यांमध्ये अध्यात्मविद्या , वाद करणाऱ्यांमध्ये तत्त्वनिर्णयासाठी केला जाणारा वाद ( तत्त्वबोध ) मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

सृष्टीचें मी असें मूळ मुख मी ओघ तो हि मी
विद्यांत आत्म - विद्या मी वक्त्यांचा तत्व - वाद मी ॥ १० - ३२ ॥

अक्षराणाम् अकारः अस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च ।

अहम् एव अक्षयः कालः धाता अहम् विश्वतः मुखः ॥ १० - ३३॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| अक्षराणाम् | AksharaaNaam | among letters | अक्षरों में | अक्षरांमध्ये |
| अकारः | AkaaraH | letter A (अ) | अकार | अकार |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | आहे |
| द्वन्द्वः | DvandvaH | the dual | द्वन्द्व नामक समास हूँ | द्वंद्व नावाचा समास |
| सामासिकस्य | Saamaasikasya | among word compounds | समासों में | समासांमध्ये |
| च | Cha | and | और | आणि |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं हूँ | मी |
| एव | Eva | verily | | तसेच |
| अक्षयः | AkshayaH | inexhaustible / everlasting | अक्षय ( अर्थात् काल का भी महाकाल ) | अविनाशी |
| कालः | KaalaH | time | काल | काळ |
| धाता | Dhaataa | the supporter | सब का धारण पोषण करनेवाला | सर्वांचे धारण पोषण करणारा |
| अहम् | Aham | I (am) | भी मैं ही हूँ | मी ( आहे ) |
| विश्वतः - मुखः | VishvataH-MukhaH | facing all directions | तथा सब ओर मुखवाला विराट् स्वरूप | सर्व बाजूंनी तोंडे असणारा ( विराट स्वरूप ) |

अन्वय :-

अक्षराणाम् अकारः , अस्मि सामासिकस्य द्वन्द्वः , अक्षयः कालः अहम् एव , च विश्वतः मुखः धाता च अहम् ( अस्मि ) ॥ १० - ३३॥

English translation:-

Among letters I am the letter "अ" and among word - compounds I am the word "द्वन्द्वः"; I am verily the inexhaustible time and I am the supporter facing all directions.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं अक्षरों में अकार हूँ और समासों में द्वन्द्व नामक समास हूँ अक्षयकाल अर्थात् काल का भी महाकाल तथा सब और मुखवाला विराट् - स्वरुप सब का धारण पोषण करनेवाला भी मैं ही हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

अक्षरांतील अकार , समासांतील द्वन्द्व समास , चिरंतन काळ आणि सर्वतोमुखी , सर्वांचे धारण - पोषण करणाराही मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

समासांत असें द्वंद अक्षरांत अकार मी
मी चि अक्षय तो काळ विश्व - कर्ता विराट् स्वयें ॥ १० - ३३॥

मृत्युः सर्वहरः च अहम् उद्भवः च भविष्यताम् ।

कीर्तिः श्रीः वाक् च नारीणाम् स्मृतिः मेधा धृतिः क्षमा ॥ १० - ३४॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| मृत्युः | MrityuH | death | मृत्यु | मृत्यू |
| सर्वहरः | SarvaharaH | all devouring | सबका नाश करनेवाला | सर्वांचा नाश करणारा |
| च | Cha | and | और | आणि |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं | मी ( आहे ) |
| उद् - भवः | UdbhavaH | birth | उत्पत्ति हेतु हूँ | उगम |
| च | Cha | and | और | आणि |
| भविष्यताम् | Bhavishyataam | of future beings | उत्पन्न होनेवालों का | उत्पन्न होणाऱ्यांचा |
| कीर्तिः | KeertiH | fame | कीर्ति | कीर्ती |
| श्रीः | ShreeH | prosperity | श्री | लक्ष्मी |
| वाक् | Vaak | speech | वाणि | वाणी |
| च | Cha | and | तथा | आणि |
| नारीणाम् | NaareeNaam | of the feminine | स्त्रियों में | तसेच स्त्रियांमध्ये |
| स्मृतिः | SmritiH | memory | स्मृति | स्मृती |
| मेधा | Medhaa | intelligence | मेधा | मेधा |
| धृतिः | DhritiH | firmness | धृति | धृती |
| क्षमा | Kshamaa | forgiveness | और क्षमा हूँ | क्षमा ( मी आहे ) |

अन्वय :-

सर्वहरः मृत्युः , भविष्यताम् उद्भवः च अहम् । नारीणाम् च कीर्तिः , श्रीः , वाक् , स्मृतिः , मेधा , धृतिः , क्षमा च ( अहम् अस्मि ) ॥ १० - ३४ ॥

English translation:-

And I am the all-devouring death and the birth of future beings. Among the feminines I am fame, prosperity, speech, memory, intelligence, firmness and forgiveness.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं सब का नाश करनेवाला मृत्यु और उत्पन्न होनेनेवालों का उत्पत्ति हेतु हूँ तथा स्त्रियों में कीर्ति , श्री , वाक् , स्मृति , मेधा , धृति और क्षमा हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

सर्वांचा संहार करणारा मृत्यू आणि भविष्यकाळी उत्पन्न होणाऱ्यांच्या उत्पत्तीचे कारण मीच आहे . स्त्रियांमध्ये कीर्ती , लक्ष्मी , वाणी , मेधा , धृती आणि क्षमा मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

सर्व - नाशक मी मृत्यु होणारा जन्म मी असें
वाणी श्री कीर्ति नारींत क्षमा मेधा धृति स्मृति ॥ १० - ३४ ॥

बृहत्साम तथा साम्नाम् गायत्री छन्दसाम् अहम् ।

मासानाम् मार्गशीर्षः अहम् ऋतूनाम् कुसुमाकरः ॥ १० - ३५ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| बृहत्साम | Brihatsaama | Brihatsaama | मैं बृहत्साम | बृहत्साम - सामवेदामध्ये स्त्रोत्र |
| तथा | Tathaa | also | तथा | तसेच |
| साम्नाम् | Saamnaam | among Saman hymns | गायन करने योग्य श्रुतियों में | गायन करण्यास योग्य अशा छंदांत |
| गायत्री | Gaayatree | Gaayatree | गायत्री छन्द | गायत्री |
| छन्दसाम् | Chhandasaam | among metrical compositions | छंदों में | छंदांमध्ये |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं हूँ | मी ( आहे ) |
| मासानाम् | Maasaanaam | among months | महीनों में | महिन्यांमध्ये |
| मार्गशीर्षः | Maarga-sheershaH | Maarga-sheersha (from middle of December to middle of January) | मार्गशीर्ष | मार्गशीर्ष |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं हूँ | मी ( आहे ) |
| ऋतूनाम् | Rutunaam | among seasons | ऋतुओं में | ऋतूंमध्ये |
| कुसुमाकरः | KusumaakaraH | the spring (flowery season) | वसन्त | वसंत ऋतू ( फुलांचा ऋतू ) |

अन्वय :-

सान्नाम् बृहत्साम , तथा छन्दसाम् गायत्री अहम् , मासानाम् मार्गशीर्षः , ऋतूनाम् ( च ) कुसुमाकरः अहम् ( अस्मि ) ॥ १० - ३५ ॥

English translation:-

Among the Saman hymns I am the Brihat-Sama, among metrical compositions I am Gayatri. Among months I am Margashirsha and among seasons I am the flowery spring.

हिन्दी अनुवाद :-

तथा गायन करने योग्य श्रुतियों में मैं बृहत्साम और छन्दों में गायत्री छन्द हूँ तथा महीनों में मार्गशीर्ष और ऋतुओं में वसन्त मैं हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

सामवेदामध्ये बृहत्साम स्तोत्र , छंदांमध्ये गायत्री छंद , महिन्यांमध्ये मार्गशीर्ष आणि ऋतूंमध्ये वसंतऋतू मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

सामांत मी बृहत् साम गायत्री मंत्र सार मी
मी मार्गशीर्ष मासांत ऋतूंत फुलला ऋतु ॥ १० - ३५ ॥

द्यूतम् छलयताम् अस्मि तेजः तेजस्विनाम् अहम् ।

जयः अस्मि व्यवसायः अस्मि सत्त्वम् सत्त्ववताम् अहम् ॥ १० - ३६ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| द्यूतम् | Dhyutam | the gambling | जूआ | जुगार |
| छलयताम् | Chhalayataam | among fraudulents | छल करनेवालों में | ( छल ) कपट करणाऱ्यांतील |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| तेजः | TejaH | the splendour | प्रभाव | तेज |
| तेजस्विनाम् | Tejasvinaam | among splendids | प्रभावशाली पुरुषों का | तेजःपुंज पुरुषांतील |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं हूँ | मी ( आहे ) |
| जयः | JayaH | victory | जीतनेवालों का विजय | जिंकणाऱ्यांचा विजय |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| व्यवसायः | VyavasaayaH | determination (behind every effort) | निश्चय करनेवालों का निश्चय | निश्चयात्मक बुद्धी |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | मी आहे |
| सत्त्वम् | Sattvam | purity | सात्त्विक भाव | सात्त्विक भाव |
| सत्त्ववताम् | Sattvavataam | among the purifieds | सात्त्विक पुरुषों का | सात्त्विक पुरूषांचा |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं हूँ | मी आहे |

अन्वय :-

छलयताम् द्यूतम् , तेजस्विनाम् तेजः अहम् अस्मि , जयः ( अहम् ) अस्मि व्यवसायः ( अहम् ) अस्मि , सत्त्ववताम् सत्त्वम् अहम् ( अस्मि ) ॥ १० - ३६ ॥

English translation:-

I am the gambling among the fraudulents, I am the splendour of the splendid. I am victory; I am determination (behind every effort). I am purity among purifieds.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं छल करनेवालों में जूआ और प्रभावशाली पुरुषों का प्रभाव हूँ। मैं जीतनेवालों का विजय हूँ। निश्चयकरनेवालों का निश्चय और सात्त्विक पुरुषों का सात्त्विक भाव हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

कपट करणाऱ्यांमध्ये जुगार , तेजस्वी पुरुषांमधील तेज मीच आहे . धैर्यशाली पुरुषांमधील धैर्य , निश्चय आणि जय मीच आहे . ( जय , निश्चय मी आहे आणि सत्त्वशीलांचे सत्त्व मीच आहे . )

विनोबांची गीताई :-

द्यूत मी छळणारांचें तेजस्व्यांतील तेज मी
सत्व मी सात्विकांतील जय मी आणि निश्चय ॥ १० - ३६ ॥

वृष्णीनाम् वासुदेवः अस्मि पाण्डवानाम् धनम् - जयः ।

मुनीनाम् अपि अहम् व्यासः कवीनाम् उशना कविः ॥ १० - ३७ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| वृष्णीनाम् | VrishNee-naam | among Vrshnis | वृष्णिवंशियों में | यादवांच्या वृष्णी नामक कुलामध्ये |
| वासुदेवः | VaasudevaH | Krishna | वासुदेव अर्थात् मैं स्वयं तेरा सखा | वासुदेव |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| पाण्डवानाम् | PaaNDa-vaanaam | Among Pandavas | पाण्डवों में | पांडवांमध्ये |
| धनम् - जयः | Dhanam-JayaH | Arjuna | अर्जुन अर्थात् तुम | अर्जुन |
| मुनीनाम् | Muneenaam | among sages | मुनियों में | मुनींमध्ये |
| अपि | Api | also | भी | सुद्धा |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं ही हूँ | मी आहे |
| व्यासः | VyaasaH | Vyasa | वेदव्यास | वेदव्यास |
| कवीनाम् | Kaveenaam | among poets | कवियों में | कवींमध्ये |
| उशना | Ushanaa | Shukracharya | शुक्राचार्य | शुक्राचार्य |
| कविः | KaviH | the poet | कवि | कवी |

अन्वय :-

वृष्णीनाम् वासुदेवः , पाण्डवानाम् धनम् - जयः ( अहम् ) अस्मि , मुनीनाम् अपि व्यासः अहम् , कवीनाम् उशना कविः ( अहम् अस्मि ) ॥ १० - ३७ ॥

English translation:-

Among the Vrushnis I am Krishna, among the Pandavas I am Arjuna; among the sages I am Vyasa and among poets I am the poet Shukracharya.

हिन्दी अनुवाद :-

यादवों के अन्तर्गत वृष्णिवंशियों में वासुदेव मैं स्वयं तुम्हारा मित्र, पाण्डवों में अर्जुन अर्थात् खुद तुम , मुनियों में वेदव्यास और कवियों में शुक्राचार्य कवि भी मैं ही हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

वृष्णी कुलातील वासुदेव ( अर्थात मी स्वतः श्रीकृष्ण ) , पाण्डवांमध्ये अर्जुन , मुनींमध्ये व्यास आणि कवींमध्ये उशना नावाचा कवी ( शुक्राचार्य ) मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

मी वासुदेव वृष्णींत पांडवांत धनंजय

मुनींत मुनि मी व्यास कवींत उशना कवि ॥ १० - ३७ ॥

दण्डः दमयताम् अस्मि नीतिः अस्मि जिगीषताम् ।

मौनम् च एव अस्मि गुह्यानाम् ज्ञानम् ज्ञानवताम् अहम् ॥ १० - ३८ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| दण्डः | DandaH | the sceptre | दण्ड अर्थात् दमन करने की शक्ति | दंड ( दमन करण्याची शक्ती ) |
| दमयताम् | Damayataam | among rulers | दमन करनेवालों का | दंड करणाऱ्यांमध्ये |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| नीतिः | NeetiH | righteousness | नीति | नीती |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| जिगीषताम् | JigeeShataam | of those who seek victory | जीतने की इच्छावालों की | जिंकण्याची इच्छा करणाऱ्यांमध्ये |
| मौनम् | Maunam | silence | मौन | मौन |
| च | Cha | and | और | आणि |
| एव | Eva | also | ही | तसेच |
| अस्मि | Asmi | (I) am | मैं हूँ | ( मी ) आहे |
| गुह्यानाम् | Guhyaanaam | among secrets | गुप्त रखने योग्य भावों का रक्षक | गुप्तगोष्टीं मध्ये |
| ज्ञानम् | Dnyaanam | knowledge | तत्त्वज्ञान | तत्त्वज्ञान |
| ज्ञानवताम् | Dnyaanavattam | of the knowers | ज्ञानवानों का | ज्ञानी पुरुषांमध्ये |
| अहम् | Aham | I (am) | मैं हूँ | मी ( आहे ) |

अन्वय :-

दमयताम् दण्डः अस्मि, जिगीषताम् नीतिः अस्मि। गुह्यानाम् मौनम् च एव अस्मि, ज्ञानम् ज्ञानवताम् अहम् (अस्मि) ॥ १० - ३८ ॥

English translation:-

I am the sceptre of rulers; I am righteousness of those who seek victory. I am silence of secrets and wisdom of the wise.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं दमन करनेवालों का दण्ड अर्थात् दमन करने की शक्ति हूँ, जीतने की इच्छा करनेवालों की नीति हूँ, गुप्त रखने योग्य भावों का रक्षक मौन हूँ और ज्ञानवानों का तत्वज्ञान मैं ही हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

शासन करणाऱ्यांची शिक्षा, जिंकू इच्छिणाऱ्यांची नीती, गुप्तगोष्टींचे रक्षण करणारे मौन आणि ज्ञानवंतांचे तत्त्वज्ञान मीच आहे.

विनोबांची गीताई :-

दंड मी दमवंतांचा विजयेच्छूंस धर्म मी
गूढांत मौन मी थोर ज्ञात्यांचे ज्ञान मी असें ॥ १० - ३८ ॥

यत् च अपि सर्व भूतानाम् बीजम् तत् अहम् अर्जुन ।

न तत् अस्ति विना यत् स्यात् मया भूतम् चर अचरम् ॥ १० - ३९ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| यत् | Yat | which | जो | जे |
| च | Cha | and | और | आणि |
| अपि | Api | also | भी | सुद्धा |
| सर्व | Sarva | all | सब | सर्व |
| भूतानाम् | Bhutaanaam | of beings | भूतों की | प्राणिमात्रांच्या |
| बीजम् | Beejam | seed | उत्पत्ति का कारण है | उत्पत्तीचे कारण |
| तत् | Tat | that | वह | ते |
| अहम् | Aham | I | मैं ही हूँ | मी ( आहे ) |
| अर्जुन | Arjuna | O Arjun | हे अर्जुन ! | हे अर्जुना ! |
| न | Na | none | नही | नाही |
| तत् | Tat | that | वह | ते |
| अस्ति | Asti | exists | है | आहे |
| विना | Vinaa | without | रहित | शिवाय |
| यत् | Yat | which | जो | जे |
| स्यात् | Syaat | may exist | हो | असेल |
| मया | Mayaa | by Me | क्योंकि मुझ से | माझ्या |
| भूतम् | Bhutam | being | ऐसा कोई भी भूत | प्राणी |
| चर | Chara | moving (and) | चर | चल |
| अचरम् | Charam | unmoving | और अचर | अचल |

अन्वय :-

हे अर्जुन ! सर्व भूतानाम् यत् च बीजम् तत् अपि अहम् ( अस्मि ), यत् चर - अचरम् भूतम् स्यात् तत् मया विना न अस्ति ॥ १० - ३९ ॥

English translation:-

O Arjuna, I am that entity, which is the seed of all beings. There is no being moving or unmoving, which can exist without Me.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जो सब भूतों की उत्पत्ति का कारण है वह भी मैं ही हूँ; क्योंकि ऐसा चर और अचर कोई भी भूत नहीं है, जो मुझ से रहित हो।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! सर्व प्राणिमात्रांच्या उत्पत्तीचे कारण ( बीज ) मीच आहे. माझ्यावाचून असू शकेल असा कोणतीही चल अथवा अचल प्राणी नाही.

विनोबांची गीताई :-

तसें चि सर्व भूतांचें बीज जें तें हि ज्ञाण मी
माझ्याविण नसे कांहीं लेश मात्र चराचरीं ॥ १० - ३९ ॥

न अन्तः अस्ति मम दिव्यानाम् विभूतीनाम् परंतप ।

एषः तु उद्-देशतः प्र-उक्तः विभूतेः विस्तरः मया ॥ १० - ४० ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| न | Na | not | नहीं | नाही |
| अन्तः | AntaH | end | अन्त | अंत |
| अस्ति | Asti | is | है | आहे |
| मम | Mama | My | मेरी | माझ्या |
| दिव्यानाम् | Divyaanaam | of divine | दिव्य | दिव्य |
| विभूतीनाम् | Vibhuteenaam | (of) manifestations | विभूतियों का | विभूतींना |
| परंतप | Parantapa | O Arjuna ! | हे अर्जुन ! | हे शत्रुतापदायक अर्जुना ! |
| एषः | EShaH | this | यह | हा |
| तु | Tu | only | तो तुम्हारे लिये | केवळ |
| उद्-देशतः | UddeshataH | briefly | संक्षेप से | थोडक्यात |
| प्र-उक्तः | ProktaH | stated | कहा है | (तुला) सांगितला आहे |
| विभूतेः | VibhuteH | Of manifestation | अपनी विभूतियों का | ( माझ्या स्वतःच्या ) विभूतींचा |
| विस्तरः | VistaraH | extent | विस्तार | विस्तार |
| मया | Mayaa | By Me | मैं ने | मी |

अन्वय :-

हे परंतप ! मम दिव्यानाम् विभूतीनाम् अन्तः न अस्ति, एषः तु विभूतेः विस्तरः मया उद्-देशतः प्र-उक्तः ॥ १० - ४० ॥

English translation:-

O Arjuna, there is no end to My divine manifestations. This is only a brief statement by Me of the extent of My manifestations.

हिन्दी अनुवाद :-

हे परंतप ! मेरी दिव्य विभूतियों का अन्त नहीं है। मैं ने अपनी विभूतियों का यह विस्तार तो तुम्हारे लिये संक्षेप से कहा है।

मराठी भाषान्तर :-

हे शत्रूला - तापदायक अर्जुना ! माझ्या दिव्य विभूतींना अन्त नाही. पण विभूतींचा हा विस्तार मी तुला थोडक्यात सांगितला आहे.

विनोबांची गीताई :-

माझ्या दिव्य विभूतींस नसे अंत कुठें चि तो
तरी विभूति विस्तार हा मी थोड्यांत बोलिलों ॥ १० - ४० ॥

यद् यद् विभूति मत् सत्त्वम् श्रीमद् ऊर्जितम् एव वा ।

तद् तद् एव अवगच्छ त्वम् मम तेजः अंश सम्भवम् ॥ १० - ४१ ॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| यत् | Yat | what | जो | जी |
| यत् | Yat | what | जो | जी |
| विभूतिमत् | Vibhutimat | glorious | विभूतियुक्त अर्थात् ऐश्वर्ययुक्त | विभूतीने युक्त म्हणजे ऐश्वर्याने युक्त |
| सत्त्वम् | Sattvam | being | वस्तु है | वस्तू ( आहे ) |
| श्रीमत् | Shreemat | prosperous | कांतियुक्त | कांतीने युक्त |
| ऊर्जितम् | Urjitam | powerful | और शक्तियुक्त | शक्तीयुक्त |
| एव | Eva | also | भी | सुद्धा |
| वा | Vaa | or | अथवा | अथवा |
| तत् | Tat | that | उस | ती |
| तत् | Tat | that | उस को | ती |
| एव | Eva | only | ही | सुद्धा |
| अव-गच्छ | Ava-gachchaaH | know | जान लो | जाणून घे |
| त्वम् | Tvam | you | तुम | तू |
| मम | Mama | My | मेरे | माझ्या |
| तेजः | TejaH | splendour | तेज के | तेजाच्या |
| अंश | Amsha | part | अंश की | अंश |
| सम्-भवम् | Sambhavam | manifestation | अभिव्यक्ति | अभिव्यक्ती |

अन्वय :-

यद् यद् सत्त्वम् विभूतिमत् , श्रीमद् , ऊर्जितम् एव वा ( अस्ति ) तद् तद् मम तेजः अंश सम्भवम् ( अस्ति इति ) एव त्वम् अवगच्छ ॥ १० - ४१ ॥

English translation:-

Whatever being is glorious, prosperous or powerful, you (better) know that to be a manifestation of a part of My splendour.

हिन्दी अनुवाद :-

जो - जो भी विभूतियुक्त अर्थात् ऐश्वर्ययुक्त कान्तियुक्त और शक्तियुक्त वस्तु है उस - उसको तू मेरे तेजके अंशकी ही अभिव्यक्ति जान ।

मराठी भाषान्तर :-

जी जी वस्तू वैभवयुक्त , शोभायुक्त आणि प्रभावयुक्त आहे , ती ती वस्तू माझ्या तेजाच्या अंशापासूनच उत्पन्न झाली आहे असे तू जाण .

विनोबांची गीताई :-

विभूति - युक्त जी वस्तु लक्ष्मीवंत उदात्त वा
माझ्या चि किरणांतूनि निघाली ज़ाण ती असे ॥ १० - ४१ ॥

अथवा बहुना एतेन किम् ज्ञातेन तव अर्जुन।

विष्टभ्य अहम् इदम् कृत्स्नम् एक अंशेन स्थितः जगत् ॥ १० - ४२॥

| शब्द | शब्द उच्चार | English | हिन्दी | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| अथवा | Athavaa | or | अथवा | अथवा |
| बहुना | Bahunaa | by many | बहुत | पुष्कळ |
| एतेन | Etena | by this | इस | हे |
| किम् | Kim | what | क्या प्रयोजन है | ( त्याचा )<br>काय उपयोग आहे ? |
| ज्ञातेन | Dnyaatena | by being known | जानने से | जाणून |
| तव | Tava | to you | तुम्हारा | तुला |
| अर्जुन | Arjuna | O Arjuna! | हे अर्जुन ! | हे अर्जुना ! |
| विष्टभ्य | VishtabhyaH | having pervaded | धारण कर | धारण करून |
| अहम् | Aham | I | मैं अपनी योगशक्ति<br>के | मी |
| इदम् | Idam | this | इस | हे |
| कृत्स्नम् | Kritsnam | all | सम्पूर्ण | संपूर्ण |
| एक | Eka | one | एक | ( फक्त ) एक |
| अंशेन | Anshena | fragment | अंशमात्र से | अंशाने |
| स्थितः | SthitaH | I remain steady | स्थित हूँ | स्थित आहे |
| जगत् | Jagat | universe | जगत् को | जग |

अन्वय :-

हे अर्जुन ! अथवा एतेन बहुना ज्ञातेन तव किम् ? अहम् इदम् कृत्स्नम् जगत् एक अंशेन विष्टभ्य स्थितः ( अस्मि इति त्वम् विद्धि ) ॥ १० - ४२॥

English translation:-

O Arjuna, but what is the need of the knowledge of such details to you. Having pervaded this entire universe by one fragment, I remain omnipresent.

हिन्दी अनुवाद :-

अथवा हे अर्जुन! इसे बहुत जानने से तेरा क्या प्रयोजन है। मैं इस सम्पूर्ण जगत् को अपनी योगशक्ति के एक अंशमात्र से धारण कर स्थित हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

( किंवा ) हे अर्जुना ! तुला इतका विस्तार जाणून काय लाभ होणार ? ( थोडक्यात , असे समज की ) मी , हे सारे विश्व आपल्या योगशक्तीच्या एका अंशाने धारण करून राहिलो आहे .

विनोबांची गीताई :-

अथवा काय हें फार ज़ाणूनि करिशील तूं
एकांशें विश्व हें सारें व्यापूनि उरलों चि मी ॥ १० - ४२॥

ॐ तत् सत् इति श्रीमद् भगवद् गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायाम् योगशास्त्रे

श्रीकृष्णार्जुन संवादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः॥

हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् ।

Om that is real. Thus, in the Upanishad of the glorious Bhagwad Geeta, the knowledge of Brahman, the Supreme, the science of Yoga and the dialogue between Shri Krishna and Arjuna this is the tenth discourse designated as "the Yoga of the Divine Manifestations".

## दहाव्या अध्यायाचा एका श्लोकात मथितार्थ

कोठे देवासि चिंतूं जरि म्हणसि असें ऐक माझ्या विभूती ।

संक्षेपें अर्जुना हे तुज गुज कथितों मी असे सर्वभूती ॥

मी धाता विष्णु मी शिव रवि निगमी साम मी विश्वरुप ।

माझी सर्वत्र सत्ता जगिं असुनि असे दिव्य माझे स्वरुप ॥ १०॥

गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।

या स्वयम् पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करण्याजोगी आहे म्हणजेच गीता उत्तम प्रकारे वाचून तिचा अर्थ आणि भाव अन्तःकरणात साठवणे हे कर्तव्य आहे . स्वतः पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णूंच्या मुखकमलातून गीता प्रगट झाली आहे . मग इतर शास्त्रांच्या फाफटपसाऱ्याची जरूरच काय ?

- श्री महर्षी व्यास

## विनोबांची गीताई :-

गीताई माउली माझी तिचा मी बाळ नेणता ।

पडतां रडतां घेई उचलूनि कडेवरी ॥